# अनुदेश एवं पाठ्यक्रम

## मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.)

## सत्र 2022–24

## समाज कार्य विभाग

## जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय

## बलिया, यूपी–227001

विभागीय प्रस्तावना –

शैक्षणिक क्षेत्र में समाज कार्य विभाग की शुरुआत एक महत्वपूर्ण पहल होती है जो शिक्षा के क्षेत्र में समाज कार्य के सिद्धांतों को मान्यता देती है। यह पहल समाज कार्य के सिद्धांतों, सामाजिक न्याय और समुदाय सेवाओं के प्रभावी अध्ययन को प्रोत्साहित करती है। समाज कार्य विभाग स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों की पेशकश करता है जो विद्यार्थियों को व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता बनने की तैयारी के लिए अवसर प्रदान करते हैं। व्यावसायिक समाज कार्य छात्रों को प्रभावी समाज कार्य अभ्यास के लिए आवश्यक ज्ञान, कौशल और नैतिक नींव से परिपूर्ण करने के लिए संरचित पाठ्यक्रम प्रदान किया गया हैं। यह पाठ्यक्रम, क्षेत्रीय अभ्यास और अनुसंधान के अवसरों के माध्यम से, इन कार्यक्रमों में नामांकित छात्र सामाजिक मुद्दों की व्यापक समझ हासिल करते हैं और उन्हें संबोधित करने के लिए आवश्यक दक्षताओं का विकास करते हैं। इसके अलावा, समाज कार्य विभाग स्थानीय समुदायों, सामाजिक सेवा एजेंसियों और वकालत समूहों के साथ सहयोग को बढ़ावा देते हैं, जिससे अनुभवात्मक शिक्षा और सामाजिक कल्याण में सार्थक योगदान की सुविधा मिलती है। संक्षेप में, समाज कार्य विभाग की शुरूआत सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को सशक्त बनाने के लिए समर्पित दयालु और सक्षम पेशेवरों को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता का प्रतीक है।

जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय में समाज कार्य विभाग, वर्ष 2021 से प्रारम्भ किया गया। यह कार्यक्रम 2021 में दो वर्ष के लिए स्नातकोत्तर डिग्री के लिए प्रस्तावित किया गया। विभाग द्वारा विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिये गये दस ग्राम पंचायतों में विद्यार्थियों के माध्यम से सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने और व्यक्तियों, परिवारों और समुदायों को सशक्त बनाने के लिए क्षेत्रीय कार्य के द्वारा कार्य किया जा रहा है। विश्वविद्यालय को उस भूमिका पर बेहद गर्व है जो विभाग बिना किसी वित्तीय संसाधनों के कार्यक्रमों को जारी रखने में निभा रहा है।

विभाग छात्रों में पेशेवर कौशल विकसित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम, ग्रामीण शिविर, अध्ययन यात्रा और क्षेत्र दौरे आयोजित करता है। पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता समसामयिक सामाजिक मुद्दों, चिंताओं और चुनौतियों का समाधान करते हैं और ग्रामीण विकास, स्थानीय स्वशासन, कमजोर समूहों यानी अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के विकास, विकलांग व्यक्तियों, महिलाओं और बच्चों के कल्याण जैसे क्षेत्रों में काम करते हैं। बुजुर्ग लोगों की देखभाल, बाल दुर्व्यवहार, सुधारात्मक प्रशासन, सार्वजनिक और सामुदायिक स्वास्थ्य, नशीली दवाओं की लत, गरीबी और बेरोजगारी, संघर्ष–समाधान, परिवार और विवाह परामर्श, श्रम कल्याण, मलिन बस्ती सुधार, कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी, कौशल विकास आदि क्षेत्रों में भी लगातार कार्य कर रहे है।

**विज़न –**

पेशेवर दक्षताओं के साथ मिश्रित प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्ताओं का उत्पादन करना, ताकि वे लोगों की भलाई हासिल करने और सामाजिक विकास के लिए सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए समसामयिक सामाजिक मुद्दों और चिंताओं को संबोधित करने में सक्षम हो सकें।

**मिशन –**

छात्रों (एमएसडब्ल्यू) में जनमानस के सामाजिक कल्याण और विकासात्मक सेवाओं के मध्यवर्ती (मध्यम स्तर) प्रबंधन के उत्तरदायित्व हेतु आवश्यक ज्ञान, पेशेवर कौशल, तकनीक, गुणों के साथ साथ कॉर्पोरेट एवं गैर–लाभकारी विकास क्षेत्रों में भी विशिष्ट दृष्टिकोण विकसित करना।

**कार्यक्रम के उद्देश्य**

- छात्रों को पर्याप्त ज्ञान, तकनीकी कौशल, पेशेवर मूल्यों, विभिन्न ग्राहकों के साथ सामाजिक कार्य अभ्यास के लिए उपयुक्त दृष्टिकोण से परिपूर्ण करना।
- लोगों को उनके जीवन के कार्यों को पूरा करने, संकट को कम करने और उनकी आकांक्षाओं और मूल्यों को साकार करने में मदद करने के लिए समस्या समाधान, संसाधन उपयोग और सेवाओं को जोड़ने के छात्रों के कौशल को सक्षम करना।
- संस्कृति–संवेदनशील, उदार और साक्ष्य–आधारित भागीदारी अभ्यास के माध्यम से सामाजिक कल्याण और संबद्ध क्षेत्रों में योग्य कर्मियों को तैयार करने के लिए पेशेवर सामाजिक कार्य में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करना।
- सामाजिक कार्य पेशे के लिए उपयुक्त ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण और मूल्यों का विकास करना।
- सामाजिक कल्याण और सामाजिक नीति के क्षेत्र में सिद्धांत और व्यवहार के एकीकरण को बढ़ावा देना।
- मानवीय समस्याओं, प्रणालीगत भेदभाव और हाशिए पर जाने, सामाजिक विकास के मुद्दों और आवश्यक सेवाओं की बेहतर समझ के लिए अंतःविषय सहयोग प्रदान करना।

**कार्यक्रम के परिणाम**

- छात्र योग्य कर्मियों को तैयार करने और विकास और संबद्ध क्षेत्रों में जनशक्ति प्रदान करने के लिए व्यावसायिक समाज कार्य में शिक्षा, प्रशिक्षण और रोजगार क्षमता को समझने में सक्षम बनेगें।

- वह विभिन्न स्तरों पर नैतिक दृष्टिकोण, संस्कृति–संवेदनशील, उदार और साक्ष्य–आधारित भागीदारी अभ्यास विकसित करने में सक्षम बनेगें।
- विद्यार्थी समाज कार्य पेशे की प्रथाओं के लिए उपयुक्त बुनियादी और व्यावसायिक ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, नैतिकता और मूल्यों को आत्मसात करने में सक्षम होगें।
- समाज कार्य पेशे के विभिन्न क्षेत्रों में सिद्धांत और व्यवहार का एकीकरण विकसित करने में सक्षम होगें।
- साथ ही सामाजिक मुद्दों, सामाजिक समस्याओं, सामाजिक विकास के मुद्दों और आवश्यक सेवाओं की बेहतर समझ के लिए अंतःविषय सहयोग में कौशल विकसित करने और सुधारने में सक्षम बनेगें।

**विशिष्ट कार्यक्रम परिणाम**

समाज कार्य कार्यक्रम में मास्टर ऑफ आर्ट्स के सफल समापन के बाद, छात्र व्यावसायिक कौशल, ज्ञान के प्रति समग्र दृष्टिकोण विकसित करने में सक्षम होते हैंय विशिष्ट क्षेत्रों में उत्कृष्टता के साथ सशक्त और अंतर्दृष्टि विकसित करने के साथ–साथ सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है और साथ ही स्व–रोजगार होने और स्वयं के स्वयं सेवी संस्था प्रारम्भ करने का भी अवसर प्राप्त होगा। कार्यक्रम के अन्य विशिष्ट परिणाम इस प्रकार है –

- समाज कार्य कार्यक्रम में कला स्नातक के स्नातक व्यावसायिक कौशल और ज्ञान के लिए एक समग्र दृष्टिकोण प्राप्त करेंगे।
- छात्रों को समाज कार्य के विशिष्ट क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि विकसित करने और उत्कृष्टता प्राप्त करने का अधिकार प्राप्त होगा।
- रोजगार के अवसर सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में मौजूद हैं।
- छात्रों के पास स्व–रोजगार बनने और अपने स्वयं के गैर–सरकारी संगठन (एनजीओ) स्थापित करने का भी विकल्प है।
- यह कार्यक्रम छात्रों को सामुदायिक विकास, वकालत और सामाजिक सेवाओं जैसे विभिन्न तरीकों के माध्यम से समाज में सार्थक योगदान देने के लिए आवश्यक उपकरणों से लैस करता है।
- संचार, सहानुभूति, समस्या–समाधान और वकालत जैसे कौशल को पूरे कार्यक्रम में निखारा जाता है, जिससे वह समाज कार्य सेटिंग्स में मूल्यवान संपत्ति बन जाते हैं।

**शीर्षक :**

पाठ्यक्रम का शीर्षक "**मास्टर ऑफ सोशल वर्क**"।

**प्रयोज्यता :**

यह कार्यक्रम, सत्र 2022–24 से मास्टर ऑफ सोशल वर्क कार्यक्रम पर लागू होंगे।

**संबंधन :**

प्रस्तावित पाठ्यक्रम सामाजिक कार्य विभाग, जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया, उत्तर प्रदेश द्वारा शासित होगा।

**अवधि :**

पाठ्यक्रम की कुल अवधि दो वर्ष की होगी, जो चार सेमेस्टर में विभाजित होगी।

**कार्यक्रम में सीटें :**

पाठ्यक्रम में प्रवेश पाने वाले छात्रों की कुल संख्या 60 होगी। पाठ्यक्रम नियमित आधार पर आयोजित किया जाएगा।

**प्रवेश हेतु न्यूनतम पात्रता :**

विश्वविद्यालय के दिशानिर्देशों के अनुसार या कानून के अनुसार स्थापित किसी विश्वविद्यालय या संस्थान द्वारा प्रदान की गई किसी भी स्ट्रीमधविषय में तीनध्चार वर्षीय स्नातक की डिग्री या समकक्ष और इस विश्वविद्यालय द्वारा सामान्य और ओबीसी श्रेणियों के लिए न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों और 45 प्रतिशत अंकों के साथ समकक्ष मान्यता प्राप्त। एससी, एसटी और विकलांग श्रेणियों या समकक्ष ग्रेड वाले व्यक्तियों के लिए अंकों की संख्या, सामाजिक कार्य कार्यक्रम में मास्टर ऑफ आर्ट्स में प्रवेश के लिए न्यूनतम आवश्यकता होगी।

**विभिन्न श्रेणियों के लिए सीटों का आरक्षण उत्तर प्रदेश राज्य सरकार के नियमों और विनियमों के अनुसार होगा।**

**प्रवेश प्रक्रिया :**

प्रवेश प्रक्रिया विश्वविद्यालय के मानदंडों (जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय, बलिया) और इस संबंध में दिशानिर्देशों के अनुसार होगी।

**अनुदेश का माध्यम :**

शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी/हिन्दी होगा।

**उपस्थिति :**

विश्वविद्यालय के मानदंडों के अनुसार या थ्योरी पेपर में न्यूनतम 75 प्रतिशत और फील्ड वर्क में 85 प्रतिशत अनिवार्य होगा।

**पाठ्यक्रम की संरचना :**

मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.) पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों, समूहों और समुदायों के कामकाज को बढ़ावा देने, बनाए रखने और सुधारने के लिए आवश्यक कक्षा शिक्षण, क्षेत्र प्रशिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से ज्ञान कौशल और मूल्यों को विकसित और प्रसारित करना है। समाज कार्य पाठ्यक्रम के मास्टर में शामिल हैं।

- सैद्धान्तिक पेपर
- फील्ड वर्क प्रैक्टिकल
- लघु शोध (Dissertation)

**सैद्धान्तिक पेपर**

चूँकि समाज कार्य एक अभ्यास आधारित पेशा है, इसलिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम छात्रों की समग्र सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण महत्व रखता है। मास्टर ऑफ सोशल वर्क पाठ्यक्रम के सैद्धांतिक पेपर के अंतर्गत दो प्रकार के पेपर होते हैंरू (ए) कोर और (बी) विशेषीकरण।

1. **कोर पेपर :** प्रत्येक सेमेस्टर में चार कोर पेपर होंगे। ये वे पेपर हैं जिनका पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए एक छात्र को मुख्य आवश्यकता के रूप में अनिवार्य रूप से अध्ययन करना होता है।

2. **विशेषीकरण पेपर** : तीसरे और चौथे सेमेस्टर में विशेषीकरण पेपर होगा। स्पेशलाइज्ड पेपर एक ऐसा पेपर है जिसे सामाजिक कार्य विभाग द्वारा प्रस्तावित तीन विशेषज्ञताओं में से चुना जा सकता है।

3. यह विशेषज्ञता पहले छात्रों को उनकी पसंद और विशेष विशेषज्ञता के लिए आवंटित सीटों की उपलब्धता के अनुसार योग्यता विषयों के अनुसार आवंटित की जाएगी।

**क्षेत्रीय कार्य अभ्यास :**

क्षेत्रीय कार्य अभ्यास समाज कार्य शिक्षा का एक आवश्यक अभिन्न अंग होने के साथ–साथ घटक भी है। इसलिए, प्रत्येक छात्र से इसमें भाग लेने की अपेक्षा की जाती है, ऐसा न करने पर उसे पाठ्यक्रम जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। क्षेत्रीय कार्य अभ्यास एक

व्यावहारिक अनुभव है जिसे छात्रों के लिए जानबूझकर व्यवस्थित किया जाता है। क्षेत्र कार्य में, क्षेत्र एक ऐसी स्थिति होगी (एक सामाजिक कल्याण/ विकास एजेंसी या एक खुला समुदाय) जो छात्रों को ग्राहक और ग्राहक प्रणाली के साथ बातचीत के लिए अवसर प्रदान करती है, जहां वे मार्गदर्शन के तहत सामाजिक कार्य विधियों, सिद्धांतों, कौशल और तकनीकों को लागू करेंगे।

**क्षेत्रीय कार्य के घटक :**

1. ओरिएंटेशन प्रोग्राम
2. समवर्ती क्षेत्र कार्य
3. अध्ययन यात्रा
4. ग्रामीण शिविर
5. ब्लॉक फील्ड वर्क /प्लेसमेंट

**शिक्षण रणनीतियाँ/ पद्धतियां :**

विषय की आवश्यकता के अनुसार निम्नलिखित विधियों को लागू किया जाएगा।

1. चर्चा
2. व्याख्यान
3. समस्या समाधान
4. प्रतिभा पलायन
5. भूमिका निभाना
6. वाद–विवाद और प्रश्नोत्तरी
7. सहभागी दृष्टिकोण
8. अतिथि व्याख्यान
9. बैंसा दक ज्सा
10. प्रोजेक्टर/पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन
11. असाइनमेंट
12. वेबिनार/सेमिनार और विशेष व्याख्यान

**क्षेत्रीय कार्य का आंकलन :**

पहले और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर–1, 2, 3 और 4 के अंत में, विषम सेमेस्टर में आंतरिक रूप से और सम सेमेस्टर यानी 2 और 4 में बाह्य रूप से एक फील्ड वर्क मूल्यांकन किया जाएगा। छात्र सभी रिपोर्टें जमा करेंगे। फील्ड कार्य पूरा होने के बाद संबंधित विभाग के पर्यवेक्षक। छात्रों को एक निर्धारित प्रपत्र में एक फील्ड वर्क स्व–मूल्यांकन रिपोर्ट और दिशानिर्देशों के अनुसार किए गए कार्यों का सारांश तैयार करना होगा और इसे संबंधित विभाग पर्यवेक्षकों को जमा करना होगा। चूंकि एमएसडब्ल्यू एक क्षेत्र आधारित पाठ्यक्रम है, इसलिए क्षेत्र कार्य रिपोर्ट के लिए प्रति सेमेस्टर 100 अंक आवंटित करना अनिवार्य है। और इसलिए, डैं पाठ्यक्रम के लिए कुल अंक 2100 होंगे। विभाग पर्यवेक्षक निम्नलिखित का उपयोग करके संबंधित छात्रों के प्रदर्शन के संबंध में एक मूल्यांकन रिपोर्ट भी तैयार करेंगेरू फील्ड कार्य का मूल्यांकन निम्न के आधार पर होगा।

| | |
|---|---|
| आंतरिक मूल्यांकन | 25 प्रतिशत (25 अंक) |
| संकलित फील्ड वर्क रिपोर्ट मूल्यांकन | 25 प्रतिशत (25 अंक) |
| मौखिक परीक्षा | 50 प्रतिशत (50 अंक) |
| कुल योग | 100 अंक |

**मौखिक परीक्षा :**

मौखिक परीक्षा का आयोजन जेएनसीयू के समाज कार्य विभाग द्वारा किया जाएगा। मौखिक परीक्षा जेएनसीयू द्वारा नियुक्त बाहरी परीक्षक की उपस्थिति में आयोजित की जाएगी। क्षेत्रीय कार्य में उत्तीर्ण होने के लिए आवश्यक न्यूनतम अंक आंतरिक और बाह्य सहित पचास (50 प्रतिशत) प्रतिशत होंगे। यदि छात्र 50 प्रतिशत अंक प्राप्त करने में असफल हो जाता है, तो छात्र को सेमेस्टर में अनुत्तीर्ण माना जाएगा।

| | |
|---|---|
| **A. थ्योरी पेपर्स का मूल्यांकन (प्रत्येक)** | **(100 अंक)** |
| आंतरिक अंक | (25 अंक) |
| थ्योरी टेस्ट | 15 अंक |
| असाइनमेंट | 05 अंक |
| उपस्थिति एवं व्यवहार | 05 अंक |
| | |
| **B. बाहरी अंक** | **(75 अंक)** |
| | |
| **C. शोध प्रबंध कार्य का मूल्यांकन** | **(100 अंक)** |

| | |
|---|---|
| रिपोर्ट लेखन | (50 अंक) |
| मौखिक परीक्षा | (50 अंक) |

**कार्यक्रम संरचना :**

| **कार्यक्रम—** मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सेमेस्टर – प्रथम** | | | | | |
| **पाठ्यक्रम कोड** | **पाठ्यक्रम का नाम** | **क्रेडिट** | **थ्योरी पेपस** | **आंतरिक अंक** | **अभ्यास कार्य** |
| MSW 101 | व्यावसायिक समाज कार्यः एवं अभ्यास | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 102 | वैयक्तिक समाज कार्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 103 | समूहिक समाज कार्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 104 | मानव वृद्धि और विकास | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 105 | अभिमुखीकरण एवं क्षेत्रीय कार्य | 04 | | | 100 |
| MSW | माइनर पेपर | 04 | 100 | | |
| **कुल योग** | | **28** | **300** | **100** | **100** |

| **कार्यक्रम—** मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सेमेस्टर – द्वितीय** | | | | | |
| **पाठ्यक्रम कोड** | **पाठ्यक्रम का नाम** | **क्रेडिट** | **थ्योरी पेपस** | आंतरिक अंक | **अभ्यास कार्य** |
| MSW 201 | समुदाय के साथ समाज कार्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 202 | समाज कल्याण प्रशासन | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 203 | सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए सामाजिक विज्ञान अवधारणाएँ | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 204 | सामाजिक समस्याएँ एवं सामाजिक कार्य हस्तक्षेप | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 205 | अध्ययन दौरा और व्यावहारिक क्षेत्र कार्य | 04 | | | 100 |
| | प्रोजेक्ट कार्य | | | | 100 |
| **कुल योग** | | **24** | **200** | **100** | **200** |

| **कार्यक्रम—** मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सेमेस्टर – तृतीय** | | | | | |
| **पाठ्यक्रम कोड** | **पाठ्यक्रम का नाम** | **क्रेडिट** | **थ्योरी पेपस** | **आंतरिक अंक** | **अभ्यास कार्य** |
| MSW 301 | सामाजिक आंदोलन एवं सामाजिक क्रिया | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 302 | सामाजिक कार्य अनुसंधान एवं सांख्यिकी | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 303 A | स्वास्थ्य और चिकित्सकीय समाज कार्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 304 A | भारतीय परिदृश्य में स्वास्थ्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 303 B | सामुदायिक विकासः अवधारणा एवं पद्धति | | | | |
| MSW 304 B | ग्रामीण समुदायिक विकास | | | | |
| MSW 303 C | परिचय : मानव संसाधन प्रबंधन | | | | |
| MSW 304 C | भारत में श्रम विधान | | | | |
| MSW 305 | ग्रामीण शिविर एवं क्षेत्रीय कार्य अभ्यास | 04 | | | 100 |
| **कुल योग** | | **24** | **200** | **100** | **100** |

| **कार्यक्रम—** मास्टर ऑफ सोशल वर्क (एम.एस.डब्ल्यू.) | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **सेमेस्टर – चतुर्थ** | | | | | |
| **पाठ्यक्रम कोड** | **पाठ्यक्रम का नाम** | **क्रेडिट** | **थ्योरी पेपस** | आंतरिक अंक | **अभ्यास कार्य** |
| MSW401 | सामाजिक नीतियां एवं योजनाएं | 05 | 50 | 25 | |
| MSW402 A | मानसिक स्वास्थ्य एवं मनोचिकित्सकीय समाज कार्य | 05 | 50 | 25 | |
| MSW403 A | मानसिक और व्यतिव विकार | 05 | 50 | 25 | |
| MSW 402 B | शहरी समुदायिक विकास | | | | |
| MSW403 B | जनजातीय समुदायिक विकास | | | | |
| MSW 402 C | श्रम कल्याण और सामाजिक सुरक्षा | | | | |
| MSW403 C | ट्रेड यूनियन और औद्योगिक संबंध | | | | |
| MSW404 | क्षेत्रीय काये अभ्यास/ब्लॉक फील्ड कार्य | 05 | | | 100 |
| MSW405 | लघु शोध प्रबंध | 04 | 50 | 25 | |
| | प्रोजेक्ट कार्य | | | | 100 |
| **कुल योग** | | **24** | **200** | **100** | **200** |

सेमेस्टर –प्रथम

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | व्यावसायिक समाज कार्यः एवं अभ्यास |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 101 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • छात्रों को समाज कार्य को समझने और उसके विभिन्न शब्दों में अंतर करने में समझ विकसित करना।<br>• व्यावसायिक समाज कार्य के उद्भव के संदर्भ में समझ विकसित करना।<br>• भारत और विदेश में व्यावसायिक समाज कार्य के ऐतिहासिक विकास के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी प्रदान करना |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | समाज कार्य : अर्थ परिभाषा उद्देश्य एवं मान्यताएँ समाज कार्य सिद्धांत, मूल्य और दर्शन |
| | 1 (ब) | समाज कार्य क्षेत्र : हरित समाज कार्य, रेडिकल समाज कार्य, नारीवादी समाज कार्य |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | ब्रिटेन में व्यावसायिक समाज कार्य का इतिहास, संयुक्त राज्य अमेरिका में व्यावसायिक समाज कार्य का इतिहास, भारत में व्यावसायिक समाज कार्य का इतिहास |
| | 1 (ब) | समाज सेवा, समाज सुधार, समाज कल्याण, सामाजिक रक्षा, सामाजिक न्याय और मानवाधिकार |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | समाज कार्य हेतु व्यावसायिक गुण और समाज कार्य कौशल |
| | 1 (ब) | व्यावसायिक सामाजिक कार्यकर्ता की व्यावसायिक भूमिका और कार्य आचार संहिता और नैतिक अभ्यास |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | व्यावसायिक समाज कार्य (राष्ट्रीय) के प्रमुख संघ छ।ँचप्ए ँ |
| | 1 (ब) | व्यावसायिक समाज कार्य (अंतर्राष्ट्रीय) के प्रमुख संघ– छौँए पौँए छँ |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्र समाज कार्य को समझने और उसके विभिन्न शब्दों में अंतर करने में सक्षम बनेंगे।<br>• एक पेशे के रूप में समाज कार्य के उद्भव के संदर्भ को समझने में सक्षम होगें।<br>• भारत और विदेश में व्यावसायिक सामाजिक कार्य के ऐतिहासिक विकास के बारे में विचार विकसित करने में उनकी समझ बनेगी। |

## References-


1. Allan, June; Pease, Bob; & Briskman, L., 2003. Critical Social Work: An Introduction to Theories and Practice, Jaipur: Allen & Unwin, NSW/Rawat Publications.
2. Bogo, Marion, 2006. Social Work Practice: Concepts, Processes, and Interviewing, Columbia University Press
3. Compton, B. R., 1980. Introduction to Social Welfare and Social Work: Structure, Functionand Process, The Dorsey Press, Irwin-Dorsey (Homewood, Ill, Georgetown, Ont.).
4. Coulshed, Veronica & Orme, Joan, 2006. Social Work Practice (4thEdn.), Palgrave Macmillan.
5. Derezotes, David S., 2000. Advanced Generalist Social Work Practice, Sage Pub., New Delhi.
6. Dubois, B. & Miley, K. K., 2005. Social Work: An Empowering Profession, Allyn and Bacon, London.
7. Higham, Patricia, 2000. Social Work: Introducing Professional Practice, SAGE, 2006.
8. Kulkarni,P.D., The Indigenous Base of Social Work Profession in India, IJSW,54(4).
9. Kumar, Hajira, 1994. Social Work: An Experience and Experiment in India, GitanjaliPublishing House, Delhi.
10. Bhatt, S., & Pathare, S. (2014). *Social work education and practice engagement.* ISBN: 9788175417571(HB), 9788175417953(PB), Shipra Publications, New Delhi,
11. Nair, T . K (2015). *Social Work Profession in India: An Uncertain Future*. Niruta Publication
12. Balgopal, P. R., & Bhatt, S. (2013). *Social Work Response to Social Realities*. Lucknow:NRBC. ISBN: 978-93-80685-78-6
13. NAPSWI (2016) Code of ethics, www.napswi.org.
14. मिश्रा, पी० डी०–सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ 2008
15. मिश्रा, पी०डी०, सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उ० प्र० हिन्दी, संस्थान लखनऊ, 2003
16. मिश्रा, पी०डी० समाज कार्य इतिहास, दर्शन एवं प्रणालिया, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ
17. शास्त्री, राजाराम समाज कार्य, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ०प्र० लखनऊ
18. अहमद, मिर्जा रफीउददीन–समाज कार्य दर्शन एवं प्रसलिया, ब्रिटीश बुक डिपो, लखनऊ

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | वैयक्तिक समाज कार्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 102 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • वैयक्तिक समाज कार्य और उसके क्षेत्र के अनुप्रयोग का गहन ज्ञान विकसित करना।<br>• अलग–अलग सेटिंग में लागू किए जाने वाले वैयक्तिक समाज कार्य कौशल का विकास करना।<br>• वैयक्तिक समाज कार्य के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | वैयक्तिक समाज कार्यः ऐतिहासिक विकास एवं समाज कार्य की पद्धति के रूप में वैयक्तिक समाज कार्य<br>वैयक्तिक समाज कार्य अर्थ, परिभाषा और उद्देश्य, धारणाएं, मूल्य, आचार संहिता एवं आवश्यकता। |
| | 1 (ब) | वैयक्तिक समाज कार्य की कुछ अवधारणाएँ : सामाजिक पर्यावरण, पर्यावरण में व्यक्ति, सेवार्थी–कार्यकर्ता संबंध। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | वैयक्तिक समाज कार्य सामान्य और विशिष्ट सिद्धांत<br>वैयक्तिक समाज कार्य घटक– व्यक्ति, समस्या, स्थान और प्रक्रिया। |
| | 1 (ब) | वैयक्तिक समाज कार्य प्रक्रिया : सेवन, अध्ययन, निदान, उपचार, समाप्ति, मूल्यांकन और अनुवती, व्यावसायिक वैयक्तिक समाज कार्य की भूमिका। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | वैयक्तिक समाज कार्य दृष्टिकोण : मनो–सामाजिक, मनो–विश्लेषण, समस्या समाधान। |
| | 1 (ब) | विभिन्न सेटिंग्स में वैयक्तिक समाज कार्य अभ्यास – सुधारात्मक, पारिवारिक, स्वास्थ्य और संकट की स्थिति। लोगों (बलात्कार, पीड़ित, विकलांग आदि) और उत्पीड़ित समूह (अल्पसंख्यक, एससीध्एसटी आदि) के साथ सामाजिक केस कार्य अभ्यास। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | वैयक्तिक समाज कार्य के उपकरण और तकनीकें |
| | 1 (ब) | वैयक्तिक समाज कार्य के कौशल : परिचय देना, सुनना, प्रश्न करना, संचार, अवलोकन और दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्र वैयक्तिक समाज कार्य और उसके बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करेगें तथा क्षेत्रीय स्तर पर इस पद्धति को प्रयोग करने में सक्षम बनेगें।<br>• वैयक्तिक समाज कार्य के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम होगें।<br>• विभिन्न सेटिंग्स में वैयक्तिक समाज कार्य को लागू करने में कौशल का विकास होगा। |

**References:**


1. Hamilton, Gordon (2013) The Theory and Practice of Social Case Work,Rawat Publication, New Delhi
2. Keats, Daphne (2002) Interviewing – A Practical Guide for Students and Professionals, New Delhi: Viva Books Pvt. Ltd
3. Pearlman, H H. (1957). Social case work: a Problem Solving Process. Chicago:University of Chicago.
4. Rameshwari Devi, Ravi Prakash (2004) Social Work Methods, Practices and Perspectives (Models of Casework Practice), Vol. II, Ch.3, Jaipur: Mangal Deep Publication
5. Gorden, Hamilion (1951): Theory and Practice of Social Case Work.
6. Grace Mathew (1997): An Introduction to Social Case Work.
7. H.H. Perlman (1957): Social Case Work: A Problem Solving Process.
8. Allen Pincus and Anne Minhan (1983): Social Work Practice: Model and Method.
9. R.K. Upadhyay (2003): Social Case Work: Therapeutic Approach.
10. Upadhyay, R. K. (2003). *Social casework: A therapeutic approach*. New D elhi, I ndia:Rawat Publications
11. Siddiqui, H. Y. (2015). *Social work & human relations*. New De lhi, India: R awatPublications
12. Shahid M. & J ha M. (2014). revisiting client-worker relationship: Biestek t hrough aGramscian Gaze. *Journal of Progressive Human Services 25*. 18-36.
13. Summers, N. (2011). *Fundamentals of Case Management Practice: Skills for the HumanServices (*HSE 210 Human Services Issues) (4th ed.). CA, USA: Brooks Cole
14. मिश्रा, पी० डी०–सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ 2008
15. मिश्रा, पी०डी०, सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, उ० प्र० हिन्दी, संस्थान लखनऊ, 2003
16. मिश्रा, पी०डी० समाज कार्य इतिहास, दर्शन एवं प्रणालिया, उ०प्र० हिन्दी संस्थान, लखनऊ
17. शास्त्री, राजाराम समाज कार्य, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, उ०प्र० लखनऊ
18. अहमद, मिर्जा रफीउददीन–समाज कार्य दर्शन एवं प्रसलिया, ब्रिटीश बुक डिपो, लखनऊ

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | सामाजिक समूह कार्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 103 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामाजिक समूह कार्य और उसके बारे में गहन ज्ञान विकसित करना तथा क्षेत्रीय स्तर पर प्रयोग करने की क्षमता विकसित करना।<br>• अलग–अलग तरीकों से लागू किए जाने वाले सामाजिक समूह कार्य कौशल का विकास करने में सक्षम बनाना।<br>• सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामाजिक समूह कार्य : परिभाषा, विशेषताएँ, उद्देश्य, महत्व, दायरा एवं मान्यताएँ |
| | 1 (ब) | सामाजिक समूह कार्य : घटक, सिद्धांत, कौशल, मूल्य एवं नैतिकता |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | समूह विकास के चरण, नेतृत्वः अच्छे नेता के प्रकार, रूप और गुण |
| | 1 (ब) | समूह गत्यातमकता एवं समूह चिकित्सा : प्रकार, उद्देश्य और माध्यम |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामाजिक समूह कार्य के मॉडल, सामाजिक समूह कार्य में रिकॉर्डिंग, सामाजिक समूह कार्य में पर्यवेक्षण |
| | 1 (ब) | सामाजिक समूह कार्य के प्रकार, सिद्धांत कौशल एवं आवश्यक शर्तें |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | उपचार समूह और कार्य समूह, सहायता समूह, शैक्षिक समूह, थेरेपी समूह और समाजीकरण समूह |
| | 1 (ब) | कार्यक्रम योजनाः संकल्पना और सिद्धांत मूल्यांकन अर्थ और सामग्री |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्र सामाजिक समूह कार्य और उसके बारे में गहन ज्ञान प्राप्त करेगें तथा क्षेत्रीय स्तर पर इस पद्धति प्रयोग करने में सक्षम होगें।<br>• अलग–अलग तरीकों से लागू किए जाने वाले सामाजिक समूह कार्य कौशल का विकास करने में सक्षम बनेगे।<br>• सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझना। |

**References:**


1. H.H. Aptekar (1955): The Dynamics of Case Work and Counseling.
2. C. Garvin (1972): Contemporary Group Work.
3. F.P.Biestek (1957): The Case Work Relationship.
4. Mary E. Woods and Florence Hollis (2000): Case Work: A PsychologicalTheory.
5. Gisela Konopka (1963): Social Group Work: A Helping Process.
6. H. Northen and R. Kusland (2001): Social Work with Groups.
7. H.Y. Siddique (2008): Group Work: Theories and Practices.
8. H.B. Trecker (1990): Social Group Work: Principles and Practices.
9. G.Wilson and G. Ryland (1949): Social Group Work Practice: The Creative Useof the Social Process.
10. P. Misra (2009): Social Group Work: Principles and Practice.
11. Lindsay, T., & Orton, S. (2014). *Group work practice in social work*. Exetor:Sage
12. Crawford, K., Price, M., & Price, B. (2014). *Group work Practice for SocialWorkers.* London: Sage
13. Trevithick, P. (2016). *Group work: a handbook of effective skills and interventions.* McGraw-Hill Education
14. Sondra, B., & Camille, P. Roman. (2016). *Group work: skills and strategies for effectiveinterventions*. Binghamton, New York: Haworth Press
15. मिश्रा, पी० डी०–सामाजिक सामूहिक कार्य, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनऊ 2008
16. मिश्रा, पी० डी०–समाज कार्य इतिहास,दर्शन एवं प्रणालियां, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनऊ 2008
17. शास्त्री, राजाराम समाज कार्य, हिन्दी समिति, सूचना विभाग,उ0प्र0 लखनऊ

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | मानव वृद्धि और विकास |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 104 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • मनोविज्ञान में प्रमुख अवधारणाओं और सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों के बारे में सीखना।<br>• सामाजिक–सांस्कृतिक अवधारणा में मानव व्यवहार की प्रकृति और विकास को समझना।<br>• सामाजिक मनोविज्ञान से संबंधित अवधारणाएँ प्रदान करना।<br>• छात्रों को विभिन्न सिद्धांतों को समझने में सक्षम बनाना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | मनोविज्ञान और मानव विकास की नींव<br>संज्ञानात्मक विकासरू बुनियादी अवधारणाएँ और सिद्धांतय मानव विकास का जीवन काल परिप्रेक्ष्यय |
| | 1 (ब) | जीवन के विभिन्न चरणों में विकास कार्य एवं आपदाएं। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | मानव व्यक्तित्व और मनोवैज्ञानिक विकार<br>व्यतिव : परिभाषा, अवधारणा और सिद्धांतय मनोवैज्ञानिक विकार और सकारात्मक स्वास्थ्य। |
| | 1 (ब) | तनाव : कारण कारक और प्रबंधन |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामाजिक मनोविज्ञान<br>सामाजिक मनोविज्ञानरू सामाजिक व्यवहार का अध्ययन करने की प्रकृति, दायरा एवं विधियाँ।<br>सामाजिक धारणा, योजना, योजनाबद्ध प्रक्रिया, एट्रिब्यूशन। |
| | 1 (ब) | मनोवृत्ति : प्रकृति, गठन और माप : जनता की राय, पूर्वाग्रह, पूर्वाग्रह और रूढ़िवादिता, नेतृत्व, समूह की सोच, भीड़ और उपद्रवी व्यवहार |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | चिकित्सीय दृष्टिकोण :<br>मनोविश्लेषणात्मक थेरेपी, सेवार्थी–केंद्रित थेरेपी और संज्ञानात्मक थेरेपी |
| | 1 (ब) | स्वदेशी उपचार एवं बायोफीडबैक थेरेपी |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्रों में मनोवैज्ञानिक अवधारणाओं, सिद्धांतों, उपचारों एवं समाज कार्य अभ्यास में उनके अनुप्रयोग की समझ विकसित होगी।<br>• छात्र विभिन्न मनोवैज्ञानिक थैरेपी का प्रयोग करने में सक्षम होगें। |

**References:**


1. C.S. Hall and others (1998): Theories ofPersonality.
2. Hurlock E.R. (1979): Introduction to Psychology.
3. Loid Dodge Farnald (2007): Psychology: Six Persfecticies.
4. David G.Myers (2006) : Psychology.
5. Rajendra K. Sharma and Rachana Sharma: (2007): Social Psychology.
6. Lena, Rolinson (1995): Psychology for Social Workers.
7. Jeffrey S. Navid (2007): Psychology: Concept and Applications.
8. Kaushik, A. (2013). *Welfare and development administration in India.* New Delhi: Global Vision Publishing House
9. R.A Baron and D. Byrne (1998): Social Psychology.
10. Kettner, P. M., M oroney, R. M., & M artin, L. L. (2017). *Designing and managing programs: an effectiveness based approach* (5th Edn). Sage
11. सिंह,अरुण, आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, मातीलाल बनारसी दास, दिल्ली।

# अभिमुखीकरण एवं क्षेत्रीय कार्य

## पाठ्यक्रम कोड MSW 105

क्षेत्रीय कार्य इस पाठ्यक्रम का एक अनिवार्य घटक है और प्रत्येक छात्र से इसमें भाग लेने की अपेक्षा की जाती है, ऐसा न करने पर उसे पाठ्यक्रम जारी रखने की अनुमति नहीं दी जाएगी। क्षेत्रीय कार्य एक व्यावहारिक अनुभव है जिसे छात्रों के लिए जानबूझकर व्यवस्थित किया जाता है। क्षेत्र कार्य में, क्षेत्र एक ऐसी स्थिति होगी (एक सामाजिक कल्याण/विकास एजेंसी या एक खुला समुदाय) जो छात्रों को सेवार्थी एवं सेवार्थी प्रणाली के साथ बातचीत के लिए अवसर प्रदान करती है, जहां वे मार्गदर्शन के तहत सामाजिक कार्य विधियों, सिद्धांतों, कौशल और तकनीकों को लागू करेंगे।

## क्षेत्र कार्य के उद्देश्य और कार्य

निम्नलिखित उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए क्षेत्रीय कार्य अभ्यास विकसित किया गया है –

उद्देश्य –

- छात्रों को विभिन्न सामाजिक कल्याण और विकास कार्यक्रमों और सेवाओं से परिचित कराना।
- व्यक्तियों और परिवारों, समूहों और समुदायों के जीवन और रहन–सहन और उनकी चेतना के स्तर को प्रभावित करने वाली जरूरतों, समस्याओं और मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।
- एजेंसी की संरचना, कार्य, सेवा वितरण प्रणाली आदि औरध्या समुदाय, इसकी विशेषताओं, संरचना, लोगों की प्रकृति और पहचान, रिश्तों की गतिशीलता, संसाधनों और अवसरों की समझ विकसित करना।
- मानवीय समस्याओं से निपटने के लिए व्यावसायिक संबंधों और रेफरल का उपयोग करना सीखने का अवसर देना।

कार्य :

- एजेंसी कर्मियों औरध्या समुदाय के लोगों के साथ संपर्क और तालमेल स्थापित करना।
- स्व–अभिविन्यास प्राप्त करें और एजेंसी औरध्या सामुदायिक प्रोफाइल तैयार करें।
- सभी संबंधित व्यक्तियों को नियमित रूप से रिपोर्ट करना, सौंपे गए कार्यों को करना और एजेंसी कर्मियों, स्वयंसेवकों और समुदाय के लोगों के साथ काम करना।
- क्षेत्रीय कार्य अनुभव का स्व–मूल्यांकन।

**अवयव :**

1. अभिमुखीकरण कार्यक्रम 2. क्षेत्रीय कार्य

**अभिमुखीकरण कार्यक्रम** प्रथम वर्ष के सेमेस्टर –1 के पाठ्यक्रम के प्रारंभ में और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर –3 की शुरुआत में एक अभिमुखीकरण कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। अभिमुखीकरण कार्यक्रम प्रारम्भ होने के बाद किसी भी छात्र को प्रवेश नहीं दिया जाएगा। कल्याण एजेंसियों औरध्या समुदायों का ओरिएंटेशन दौरा अभिमुखीकरण कार्यक्रम का एक अभिन्न अंग होगा। अभिमुखीकरण कार्यक्रम के दौरान छात्रों की उपस्थिति अनिवार्य है।

**क्षेत्रीय कार्य** पहले और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर (विषम और सम दोनों) की शुरुआत से ही सिद्धांत पत्रों के कक्षा–कक्ष शिक्षण के साथ–साथ समवर्ती क्षेत्र कार्य करना आवश्यक होगा और प्रारंभ से पहले तैयारी छोड़ने तक जारी रहेगा। परीक्षाओं का. समवर्ती क्षेत्र कार्य करने के लिए छात्रों को सप्ताह में दो दिन आवंटित किए जाएंगे।

# सेमेस्टर – द्वितीय

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | समुदाय के साथ समाज कार्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 201 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामाजिक कार्य अभ्यास में समुदाय की अवधारणा और दृष्टिकोण पर समझ विकसित करना।<br>• समुदाय में शक्ति संबंध और शक्ति संरचना की आलोचनात्मक समझ बनाना।<br>• सामाजिक कार्य की एक पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन की समझ विकसित करना।<br>• समुदाय के बारे में विद्यार्थियों में प्रमुख कौशल और क्षमताओं एवं सामाजिक कार्य हस्तक्षेप पर समझ विकसित करना |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | समुदाय : संकल्पना, विशेषताएँ, प्रकार और कार्य सामुदायिक संगठनरू संकल्पना, परिभाषा और विशेषताएँ |
| | 1 (ब) | सामुदायिक संगठन प्रथाएं और सामुदायिक संगठन प्रथाओं में मानवाधिकार |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | सामुदायिक सशक्तिकरण : सशक्तिकरण की अवधारणा और बाधाएँ और सशक्तिकरण का चक्र |
| | 1 (ब) | शक्ति संरचना : अवधारणा, सीमा, आयाम, प्रकार और सामुदायिक संगठन की प्रासंगिकता |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामुदायिक संगठन : प्रक्रिया, कौशल और सिद्धांत सामुदायिक संगठनरू मॉडल : एचवाई सिद्दीकी, रथमान |
| | 1 (ब) | सामुदायिक कार्यकर्ता की भूमिका |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | अवधारणा एवं उपयोग : पीआरए, पीएलए, पीएआर<br>सामुदायिक कोष : अवधारणा |
| | 1 (ब) | जन सहभागीता : अवधारणा, अर्थ और उद्देश्य |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • समाज कार्य अभ्यास में समुदाय की अवधारणा और परिप्रेक्ष्य को समझने में सक्षम होगें।<br>• समुदाय, इसकी संरचना, संगठन और कार्यकर्ता की भूमिका के साथ–साथ विकास में भागीदारी तकनीकों के बारे में जानकारी प्राप्त होगी।<br>• समुदाय में शक्ति संबंध और शक्ति संरचना की आलोचनात्मक समझ विकसित करने में सक्षम होगें।<br>• छात्रों में समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में सामुदायिक संगठन विषय पर समझ बनेगी।<br>• सामुदायिक स्तर के बारे में प्रमुख कौशल और क्षमताएं विकसित करने एवं समाज कार्य हस्तक्षेप के प्रयोग में कुशल बनेगे। |

**References:**


1. Ross, M.G. (1967): Community Organization
2. Dunham, Arthur (1958): Community Welfare Organization
3. Murphy, GG (1954): Community Organization Practice.
4. Gangrade, K.D. (1971): Community Organization in India.
5. Siddque H.Y. (1997): Working with Communities: An Introduction to Community Work.
6. G. Brager and H. SpechT (1969): Community Organization.
7. Singh. Gurnam. Community Development. Rapid Book Publications, Lucknow, UP
8. Weil, M., Reisch, M., & Ohmer, M. L. (2013). *The handbook of community practice* (2ndedition). Sage.
9. Forde, C. & Lynch, D. (2013). *Social work and community development: A critical practice perspective*. Macmillan Palgrave
10. Ife, J. (2013). *Community development in an uncertain world: Vision, analysis and practice.* Cambridge University Press.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | समाज कल्याण प्रशासन |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 202 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • समाज कल्याण प्रशासन को समाज कार्य की पद्धति के रूप में समझ विकसित करना।<br>• समाज कल्याण प्रशासन के बुनियादी सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | समाज कल्याण प्रशासन : अर्थ, परिभाषाएँ, कार्यक्षेत्र, प्रक्रिया एवं कौशल। |
| | 1 (ब) | सरकारी और गैर–सरकारी संगठन में समाज कल्याण प्रशासन |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | समाज कल्याण प्रशासन और संबंधित अवधारणाएँ : सामाजिक प्रशासन, समाज–सेवा प्रशासन, सामाजिक सुरक्षा |
| | 1 (ब) | प्रशासन, कल्याण प्रशासन, |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | समाज के कमजोर और कमजोर वर्गों के कल्याण और विकास के संबंध मेंय केन्द्रीय स्तर पर समाज कल्याण विभाग का प्रशासन, |
| | 1 (ब) | केंद्रीय समाज कल्याण बोर्ड, धन जुटाना ;थ्नदक त्ंेपदह द्ध एवं स्वैच्छिक संगठन की समस्याएं। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | नीति बनाना, योजना बनाना, आयोजन करना, स्टाफिंग, निर्देशन, समन्वय, रिपोर्टिंग, बजट बनाना, संचार। |
| | 1 (ब) | रिपोर्ट लेखन और लागत–लाभ विश्लेषण। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्रों में समाज कल्याण प्रशासन को समाज कार्य की पद्धति के सन्दर्भ में समझ बढ़ेगी।<br>• समाज कल्याण प्रशासन के बुनियादी सिद्धांतों और प्रक्रियाओं के बारे में छात्र जानकारी प्राप्त करेगें। |

**References:**


1. Goel, S.L. and Jain, R.K. (1988): Social Welfare Administration (Vol. I and II)
2. Chaudhary, D.Paul (1992); Social Welfare Administration
3. Dubey, S.N. (1973): Administration of Social Welfare Programmes in India.
4. Kohli, A.S. (2013): Administration of Social Welfare.
5. Pathak, S. (2013): Social Work and Social Welfare.
6. Patt, Rino (2004): Social Welfare Administration: Managing Social Programmes in a Development Context.
7. Sachdeva, D.R. (1998): Social Welfare Administration in India.
8. Skidmore (1983): Social Work Administration
9. Verma, R.B.S. (2014): Introduction to Social Administration.
10. Kaushik, A. (2013). *Welfare and development administration in India.* New Delhi:Global Vision Publishing House
11. Kettner, P. M., M oroney, R. M., & M artin, L. L. (2017). *Designing and managingprograms: an effectiveness based approach* (5th Edn). Sage
12. Alcock, P., Haux, T., May, M., & Wright, S. (eds.) (2016). *The student's companion to social policy* 5th Edn. Oxford: Blackwell /Social Policy Association
13. Pathak, S. H. (2013). *Social policy, social welfare and social development.* Bangalore: Niruta

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | सामाजिक कार्यकर्ताओं हेतु सामाजिक विज्ञान अवधारणाएँ |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 203 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामाजिक विज्ञान की अवधारणा को समझना।<br>• समसामयिक सामाजिक विज्ञान के बारे में छात्रों को जागरूक करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | समाज : अवधारणा, विशेषताएँ एवं प्रकार<br>सामाजिक समूह : अवधारणा, विशेषताएँ एवं प्रकार : प्राथमिक माध्यमिक एवं संदर्भ। |
| | 1 (ब) | सामाजिक परिवर्तन एवं सामाजिक नियंत्रण : अवधारणा परिभाषा एवं विशेषताएँ एवं प्रकार।<br>सामाजिक परिवर्तन के सिद्धांत : चक्रीय और रेखीय।<br>समाजीकरण : अर्थ परिभाषा एवं संसथाएं। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | माल्थसियन सिद्धांतः सामर्थ्य और कमजोरियाँ, माल्थसियन सिद्धांत की आलोचनायें<br>अनुकूलतम जनसंख्या सिद्धांत |
| | 1 (ब) | लीबेंस्टीन का गंभीर न्यूनतम प्रयास का सिद्धांत : जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | आर्थिक विकास और आर्थिक वृद्धि : सतत विकास लक्ष्य |
| | 1 (ब) | एलपीजी की अवधारणा (उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण) |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | भारतीय संविधान की मूल विशेषताएँ मौलिक अधिकार, राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत, पुलिस और मानवाधिकार, भारतीय न्यायपालिका और मानवाधिकार, कल्याणकारी राज्य। |
| | 1 (ब) | महिलाओं के मानवीय एवं कानूनी अधिकार, कन्या भ्रूण हत्या, मानवाधिकार; बच्चों को सुरक्षा |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • सामाजिक विज्ञान की अवधारणा को समझने में सक्षम होगें।<br>• समसामयिक सामाजिक विज्ञान के मुद्दों की पहचान करने में सक्षम होगें। |

**References**


1. Kingsley Davis (1969): Human Society.
2. Ely Chinoy (1967): Society: An Introduction to Sociology.
3. K.M. Kapadia (1966): Marriage and Family in India.
4. Michael Haralambas (1980): Sociology.
5. R.K. Sharma (1997): Indian Society Institution and Change.
6. K. Verghese (1992): General Sociology.
7. B.B. Tandon and K.K. Tandan (1997): Indian Economy.
8. Krishna, P. S. (2017). *Social exclusion and justice in India*. Taylor & Francis
9. Jodhka, S. S. (2015). *Caste in contemporary India*. New Delhi: Routledge.
10. Kummitha, R. (2015). Social exclusion: The European concept for Indian social reality, social change. *Sage Journal, 45(*1) 1–23
11. Haralambos. (2014). *Sociology: Themes and perspectives*. Harper Collins; Eightedition
12. Deshpande, S. (2014). *The problem of caste*. New Delhi: Orient Blackswan.
13. Nagla, B. K. (2013). *Indian sociological thought*: Rawat Publication
14. Sudha, P. (2013). *Dalit assertion*: Oxford India Short Introductions
15. Ritzer, G. (2012). *Sociological theory*: Tata McGraw Hill Education
16. Surinder, S. J. (2012). *Caste*: Oxford India Short Introductions
17. Govind, R. (2018).Ambedkar's lessons, ambedkar's challenges Hinduism, hindutva and the Indian nation.
18. *Economic and Political Weekly*
    http://www.epw.in/system/files/pdf/2018_53/4/SA_LIII_4_270118_Rahul_Gov ind.pdf

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | सामाजिक समस्याएँ एवं सामाजिक कार्य हस्तक्षेप |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 204 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | सामाजिक समस्या की अवधारणा को समझना।<br>समसामयिक सामाजिक समस्याओं के बारे में अधिक जानकारी प्रदान करना।<br>समाज की संरचनात्मक समस्याओं को समझना।<br>सामाजिक क्रिया समाधान हेतु हस्तक्षेप रणनीति पर समझ विकसित करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामाजिक समस्या की वैचारिक अवधारणा, प्रकृति, विशेषताएँ, प्रकार और कारण |
| | 1 (ब) | सामाजिक समस्या के अध्ययन के दृष्टिकोण एवं पद्धति : सामाजिक विचलन और अनुरूपता : अवधारणा, प्रकृति और विशेषताएँ |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | भारत में समसामयिक सामाजिक समस्याएँ–I<br>गरीबी, अशिक्षा, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, वेश्यावृत्ति, नशीली दवाओं की लत, अवधारणाः कारण, परिणाम |
| | 1 (ब) | प्रत्येक समस्या की हस्तक्षेप रणनीतियाँ |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | भारत में समसामयिक सामाजिक समस्या–II<br>आतंकवाद, मानवाधिकारों का उल्लंघन, किशोर अपराध, पर्यावरण से संबंधित समस्याएं, |
| | 1 (ब) | बलात्कार पीड़िता की समस्या : अवधारणा, कारण और परिणाम, हस्तक्षेप रणनीतियाँ। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | समाज की संरचनात्मक समस्याएँ : अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यकों की समस्याएँ |
| | 1 (ब) | जेडंर भेदभाव, घरेलू हिंसा : कारण, परिणाम और हस्तक्षेप रणनीतियाँ। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • सामाजिक समस्याओं की अवधारणा को समझने में सक्षम होंगे।<br>• समसामयिक सामाजिक समस्याओं की पहचान करने में सक्षम होंगे।<br>• समाज की संरचनात्मक समस्याओं को समझने में समझ विकसित होगी।<br>• छसत्रों में सामाजिक क्रिया संबंधित समस्याओं के समाधान हेतु हस्तक्षेप रणनीति पर समझ बनेगी। |

**References:**


1. *Prabhu, PH, (1963). Hindu Social Organization, Popular Prakasham, Bombay.*
2. Hutton J.H., (1983). Caste in India, Oxford University Press, Bombay.
3. *Kapadia K.M. , (1966). Marriage and Family in India, Oxford University Press,Bombay.*
4. Ram Ahuja, (1993). Indian Social System. Vedam Book House, Jaipur. (Hindi)
5. Haralambos. (2014). *Sociology: Themes and perspectives*. Harper Collins; Eight edition
6. Deshpande, S. (2014). *The problem of caste*. New Delhi: Orient Blackswan.
7. Nagla, B. K. (2013). *Indian sociological thought*: Rawat Publication
8. Sudha, P. (2013). *Dalit assertion*: Oxford India Short Introductions
9. Ritzer, G. (2012). *Sociological theory*: Tata McGraw Hill Education
10. Surinder, S. J. (2012). *Caste*: Oxford India Short Introductions
11. Govind, R. (2018). Ambedkar's lessons, ambedkar's challenges Hinduism, hindutva andthe Indian nation. *Economic and Political Weekly*

http://www.epw.in/system/files/pdf/2018_53/4/SA_LIII_4_270118_Rahul_Govind.pdf

# अभिमुखीकरण एवं क्षेत्रीय कार्य

## पाठ्यक्रम कोड MSW 205

**उद्देश्य –**

- समाज कार्य पेशे की विशेषताओं सहित नैतिकता और मूल्यों को आत्मसात करना।
- अनुभवध्सीखने, सेवाओं और संसाधनों का मूल्यांकन बताने और सेवा वितरण में भाग लेने की क्षमता विकसित करना।
- व्यक्तियों, समूहों और समुदायों के साथ काम करने के तरीकों का अभ्यास करना।
- प्रक्रिया/विधि–उन्मुख रिकॉर्ड तैयार करने की क्षमता विकसित करना।?

**कार्य :**

• व्यक्तियों और परिवारों, समूहों और समुदायों की आवश्यकताओं औरध्या समस्याओं के प्रेरक कारकों का अन्वेषण, विश्लेषण और पता लगाएं।

• सैद्धांतिक ज्ञान को क्षेत्र अभ्यास यानी सामाजिक कार्य की विधियों, सिद्धांतों, कौशल और तकनीकों आदि के साथ एकीकृत करें।

• एजेंसी और समुदाय की ओर से आधिकारिक पत्राचार करें।

• इसमें शामिल सभी प्रक्रियाओं के लिए रिकॉर्ड तैयार करें।

**अवयव :**

• क्षेत्रीय कार्य

• स्टडी टूर

**क्षेत्रीय कार्य**

पहले और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर (विषम और सम दोनों) की शुरुआत से ही सिद्धांत पत्रों के कक्षा–कक्ष शिक्षण के साथ–साथ समवर्ती क्षेत्र कार्य करना आवश्यक होगा और परीक्षा शुरू होने से पहले तैयारी छुट्टी तक जारी रहेगा। समवर्ती क्षेत्र कार्य करने के लिए छात्रों को सप्ताह में दो दिन आवंटित किए जाएंगे। छात्रों को प्रत्यक्ष सेवा वितरण शुरू करने और उसमें भाग लेने के लिए सामाजिक कल्याण एजेंसियों या खुली सामुदायिक सेटिंग्स में रखा जा सकता है। प्रत्येक छात्र के लिए प्रति सप्ताह कम से कम 15 घंटे (रिपोर्ट लेखन सहित) समवर्ती क्षेत्र कार्य की आवश्यकता होगी। प्रति सेमेस्टर 14 सप्ताह के क्षेत्र अनुभव के आधार पर, छात्रों को प्रत्येक सेमेस्टर में 200 घंटे या लगातार दो सेमेस्टर के लिए कुल 400 घंटे जमा करने चाहिए।

**Observation Visits/Study Tour :**

सेमेस्टर–1 एवं 3 के छात्रों को सामाजिक समस्याओं के प्रति सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों की पहल के बारे में जानने के लिए विभिन्न एजेंसी और/या सामुदायिक सेटिंग्स का दौरा करने और अवलोकन करने का अवसर दिया जाएगा।

सेमेस्टर – द्वितीय

## माइनर पेपर

| | |
|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | समाज कार्य की मूल अवधारणों |
| **पाठ्यक्रम कोड** | MSW 206 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | एक व्यावसायिक समाज कार्य के उद्भव के संदर्भ को समझें।<br>वैयक्तिक सेवा कार्य का गहन ज्ञान विकसित करना।<br>सामाजिक समूह कार्य का गहन ज्ञान विकसित करना।<br>सामुदायिक संगठन का गहन ज्ञान विकसित करना।<br>समाज कार्य के क्षेत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट –1 | समाज कार्य : अर्थ परिभाषा उद्देश्य एवं अवधारणा<br>समाज कार्य : प्रमुख मूल्य और दर्शन।<br>यूएसए, यूके और भारत के एक व्यावसायिक समाज कार्य का ऐतिहासिक विकास। |
| यूनिट –2 | समाज कार्य की पद्धतियां : सामाजिक वैयक्तिक कार्य, सामाजिक समूह कार्य, सामुदायिक संगठन। |
| यूनिट –3 | समाज कार्य के द्वितीयक पद्धति : समाज कल्याण प्रशासन, सामाजिक अनुसंधान और सामाजिक क्रिया अवधारणा, अर्थ, परिभाषा और सिद्धांत। |
| यूनिट –4 | समाज कार्य के प्रमुख क्षेत्र : परिवार एवं बाल कल्याण, महिला कल्याण और महिला सशक्तिकरण, युवा कल्याण, चिकित्सा एवं चिकित्सकीय समाज कार्य, ग्रामीण और शहरी सामुदायिक विकास, सुधारात्मक प्रशासनय श्रम कल्याण, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति का कल्याण |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | सामाजिक कार्य और अन्य संबंधित शब्दों को समझने और उनमें अंतर करने में सक्षम होंगे।<br>एक व्यावसाय के रूप में समाज कार्य के उद्भव के संदर्भ को समझने में सक्षम बनेगे।<br>पेशेवर सामाजिक कार्य में समग्र दृष्टिकोण को समझने में सक्षम बनेगे। |

**References:**


1 Compton, B. R., 1980. Introduction to Social Welfare and Social Work: Structure, Functionand Process, the Dorsey Press, Irwin-Dorsey (Homewood, Ill, Georgetown, Ont.).
2 Coulshed, Veronica & Orme, Joan, 2006. Social Work Practice (4thEdn.),PalgraveMacmillan.
3 Derezotes, David S., 2000. Advanced Generalist Social Work Practice, Sage Pub., NewDelhi.
4 Pearlman, H H. (1957). Social case work: a Problem Solving Process. Chicago: University of Chicago.
5 Rameshwari Devi, Ravi Prakash (2004) Social Work Methods, Practices and Perspectives (Models of Casework Practice), Vol. II, Ch.3, Jaipur: Mangal Deep Publication.
6 P. Misra (2009): Social Group Work: Principles and Practice.
7 Ross, M.G. (1967): Community Organization.
8 Chaudhary, D.Paul (1992); Social Welfare Administration.
9 Ram Ahuja, (1993). Indian Social System. Vedam Book House, Jaipur. (Hindi).
10 Gandhi, P.K. (ed.): Social Action Through Law

## सेमेस्टर – तृतीय

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | सामाजिक आंदोलन एवं क्रिया |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 301 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • समाज कार्य की एक पद्धति के रूप में सामाजिक क्रिया की समझ विकसित करना।<br>• सामाजिक क्रिया के दृष्टिकोण एवं तकनीकों के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामाजिक क्रिया : अवधारणा, परिभाषा, उद्देश्य, विशेषताएँ एवं स्तर |
| | 1 (ब) | समाज कार्य और सामाजिक सुधारय भारत में रेडिकल सोशल वर्क |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | सामाजिक क्रिया की पद्धतियां एवं रणनीतियाँ, सामाजिक क्रिया के सिद्धांत |
| | 1 (ब) | समाज कार्य (द्वंद्वात्मक भौतिकवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, वर्ग और वर्ग संघर्ष) |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | स्वदेशी समाजवादी :राम मनोहर लोहियाय बचपन बचाओ आंदोलन – कैलाश सत्यार्थीय सामुदायिक सशक्तिकरण – बाबा आमप्टे |
| | 1 (ब) | भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना हजारे का आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन– मेधा पाटेकर |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | भारत में सामाजिक क्रिया : ब्रह्म समाज, सत्यशोधक समाज, गांधी जी का सत्याग्रह, |
| | 1 (ब) | जाति विनाशक : अम्बेडकर, कट्टरपंथी सुधारकरू ई.वी. रामास्वामी, |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • समाजिक क्रियाओं की समझ में वृद्धि से छात्र समाज में सक्रिय भूमिका निभाने और समस्याओं का समाधान करने के लिए सक्षम होंगे।<br>• छात्रों में समाज में सहयोग, समर्थन, और सम्मान के मूल्यों को समझने में मदद होगी।<br>• समाज के विभिन्न समस्याओं को समझने एवं उनका समाधान ढूंढने के लिए सामाजिक क्रिया का उपयोग कर सकेगे। |

**Suggested Readings:**


1. Gandhi, P.K. (ed.): Social Action Through Law
2. Siddique, H.Y. (Ed.) (1984): Social Work and Social Action
3. Moorthy,M.V. (1999). Social Action.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | समाज कार्य अनुसंधान एवं सांख्यिकी |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 302 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • समाज कार्य अनुसंधान के अर्थ, दायरे और महत्व को समझना।<br>• सामाजिक घटना के अध्ययन में विधियों के अनुप्रयोग को समझना।<br>• शिक्षार्थियों को सामाजिक कार्य अनुसंधान की विधियों, तकनीकों और वैज्ञानिक प्रक्रिया की जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | अनुसंधान की अवधारणा, सामाजिक अनुसंधान : उद्देश्य और कार्यक्षेत्र का अर्थ |
| | 1 (ब) | समाज कार्य अनुसंधान के बीच एक विधि उन्मुख और अनुसंधान पद्धति संबंधी अंतर,<br>अनुसंधान के प्रकार : शुद्ध, व्यावहारिक एवं क्रियात्मक अनुसंधान |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | समाज कार्य अनुसंधान के चरण, परिकल्पना का अर्थ एवं प्रकार,<br>अनुसंधान डिजाइन : अर्थ और प्रकार |
| | 1 (ब) | निदर्शन : अर्थ और प्रकार, आकड़ा संकलन के स्रोत : प्राथमिक एवं द्वैतीयक |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | डेटा संग्रह की विधि : अवलोकन साक्षात्कार, डेटा संग्रह के उपकरण : साक्षात्कार अनुसूची और प्रश्नावली |
| | 1 (ब) | डेटा विश्लेषण : कोडिंग वर्गीकरण और सारणीकरण का संपादन, शोध रिपार्टिंग, सन्दर्भित करने की शैली ( Style of Referencing) |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | समाज कार्य अनुसंधान में सांख्यिकी की अवधारणा एवं क्षेत्र<br>केंद्रीय प्रवृत्ति के माप : माध्य माध्यिका बहुलक |
| | 1 (ब) | फैलाव का माप ( Measure of Dispersion) मानक विचलन, माध्य सहसंबंध और काई–स्क्वायर परीक्षण, विचलन |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | अनुसंधान करने की प्रक्रिया को समझने के साथ–साथ तार्किक भी सामाजिक विज्ञान में सूचना की सांख्यिकीय व्याख्या को समझेगें। |

**References:**


1. Frederick L. Coolidge (2000): Statistics: Gentle Introduction.
2. Richard M. Grinnel and others: (2005): Social Work Research and Evaluation: Quantitative andQualitative Approaches.
3. Perry R. Hinton (2004): Statistics Explained: A Guide for Social Science Students.
4. D.K. Laldas (2000): Practice of Social Research.
5. D.K. Laldas (2013): Approaches to Social Science Research Methods.
6. Partha N. Mukharjee (2000): Methodology in Social Research: Dilemma and Perspectives.
7. A.Rubin and K. Babbie (1993): Research Methods for Social Work
8. सिंह. एस. पी. 2005. सांख्यिकीः सिद्धान्त एवम् सूचना प्रबन्ध, उ० प्र० हिन्दी संस्थान
9. चौबे, अनुराग, शुक्ला, सुधीर, 2010. श्कम्प्यूटर एवम् सूचना प्रबन्धश लखनऊ, उ० प्र० हिन्दी संस्थान
10. सिंह, सुरेन्द्र. 2012 सामाजिक अनुसंधानश, उ०प्र० हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, लखनऊ।
11. मुखर्जी, रविन्द्र नाथ, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन दिल्ली।
12. त्रिपाठी, रमाशंकर, 2010. समाजिक शोध एवं सांख्यिकी तार्किकताश, विजय प्रकाशन मंदिर, वाराणसी।
13. गोयल, सुनील एवं संगीता गोयल, 2015. श्उच्चतर सामाजिक अनुसंधानश, आर० बी० एस० ए० पब्लिशर्स जयपुर
14. आहुजा, राम, सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसंधान, रावत पब्लिकेशन, जयपुर एवं नई दिल्ली।
15. तोमर, राम बिहारी. श्सामाजिक अनुसंधान, श्रीराम मेहरा एण्ड कम्पनी, आगरा

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | स्वास्थ्य एवं चिकित्सकीय समाज कार्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 303 A |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामाजिक और मानव विकास के महत्वपूर्ण पहलू के रूप में स्वास्थ्य की अवधारणा के प्रति संवेदित करना।<br>• देश में स्वास्थ्य देखभाल सेवाओं और कार्यक्रमों की जानकारी देना।<br>• एक चिकित्सकीय समाज कार्यकर्ता की भूमिका, जिम्मेदारियों और नैतिक मूल्यों पर समझ विकसित करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | स्वास्थ्य : अवधारणा, नवीन दर्शन, प्रकृति, घटक, सूचक एवं आयाम<br>रुगणता : अवधारणा, कारण और प्रकार |
| | 1 (ब) | स्वच्छता : अवधारणा, और स्वच्छता के लिए सामाजिक जिम्मेदारियाँ<br>स्वच्छता |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | चिकित्सकीय समाज कार्य की अवधारणा एवं प्रकृति |
| | 1 (ब) | चिकित्सकीय समाज कार्य के उद्देश्य चिकित्सकीय समाज कार्य के क्षेत्र |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका : चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता के कार्य एवं कर्त्तव्य |
| | 1 (ब) | स्वास्थ्य सेटिंग में समाज कार्य विधियों और तकनीकों का उपयोग |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | ओपीडी रोगियों के साथ, रोगियों और परिवार में चिकित्सकीय समाज कार्य अभ्यास<br>चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ताओं के समक्ष चुनौतियाँ |
| | 1 (ब) | सामाजिक कार्य हस्तक्षेप व्यक्तिगत समूह और समुदाय |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्रों में विभिन्न स्वास्थ्य सेटिंग्स में सामाजिक कार्य तकनीकों के बारे में समझने में सक्षम होंगे।<br>• छात्रों में चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता की क्षमता एवं कौशल का विकास होगा। |

***References:***


1. Philips, Dr and Verghes, 1994: Y., Health and Development.
2. Hiraman, A.B., 1996: Health Education an Indian Perspective.
4. Oak, T.M (ed.), 1991: Sociology of Health in India.
6. Park, K., 1997: Park's Text Book of Preventive and Social Medicines.
7. Daniel, W. B arrett. (2016). *Social psychology-core concepts and emerging trends*. London:Sage

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | भारत में उभरता स्वास्थ्य परिदृश्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 304 A |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामुदायिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप से संबंधित जानकारी प्रदान करना। विभिन्न स्वास्थ्य समितियों के विषय में जानकारी प्रदान करना।<br>• सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बारे में चर्चा करना।<br>• विभिन्न स्वास्थ्य सेटिंग्स में सामाजिक कार्य अभ्यास की प्रासंगिकता, डोमेन और प्रकृति से अवगत कराना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | रोग : अवधारणा, परिभाषा और प्रकार |
| | 1 (ब) | संचारी रोग और गैर संचारी रोग |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | स्वास्थ्य संबंधी समितियाँ : भोरे समिति, मुदलियार समिति<br>चड्ढा समिति, |
| | 1 (ब) | मुखर्जी समिति, जंगलवाला समिति, करतार सिंह समिति, श्रीवास्तव समिति |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | अल्मा अता घोषणा : सभी के लिए स्वास्थ्य नई स्वास्थ्य नीतियां |
| | 1 (ब) | राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम और राष्ट्रीय क्षय रोग नियंत्रण कार्यक्रम |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली का स्तरय चिकित्सा सामाजिक कार्य कार्यकर्ताओं की भूमिकाय चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता के कार्य /कर्त्तव्य स्वास्थ्य देखभाल में मरीजों के अधिकार एवं कर्तव्य |
| | 1 (ब) | स्वास्थ्य क्षेत्र में बदलते रुझान, स्वास्थ्य में काम करने वाली संस्थाएं WHO, Care India |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • सामुदायिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप को समझने में सक्षम होंगे।<br>• विभिन्न स्वास्थ्य समितियों के विषय में जानकारी प्राप्त होगी।<br>• सरकार द्वारा चलाये जा रहे स्वास्थ्य कार्यक्रमों के बारे जानकारी प्राप्त होगी।<br>विभिन्न स्वास्थ्य सेटिंग्स में सामाजिक कार्य अभ्यास की प्रासंगिकता, डोमेन और प्रकृति से अवगत होंगे जिससे स्वास्थ्य सेटिंग्स में कार्य करने में दक्ष बनेगे। |

**References:**


1. Lathem, W. and Newbary, 1970: A., Community Medicine-Teaching, Research and Health Care.
2. Hilleboe, HE and Lorimore, 1966: G.W., Preventive Medicine.
3. Mechanic, David, 1985: Medical Sociology - A selective View.
4. Mathur, J.S., 1971: Introduction to Social and Preventive Medicine.
5. Singh, Surendra and Mishra, 2000: P.D., Health and Diseases: Dynamics andDimensions.
6. Annual Reports of Ministry of Health and Family Welfare, Government of India.
7. Steen, M., & Thomas, M. (2016). *Mental health across lifespan*. New York: Rutledge
8. Butcher, J. N., Hooley, J. M., & Mineka, S. M. (2017). *Abnormal psychology andmodern life*. New Delhi: Pearson Education

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | समुदायिक विकास : अवधारणा एवं पद्धति |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 303 B |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामुदायिक विकास (सी.डी) की अवधारणा को समझेंगे, जिसमें इसके दर्शन, मूल्य, प्रक्रिया और तरीके शामिल हैं।<br>• सामुदायिक विकास में आवश्यक मूल्यांकन, भागीदारी और नेतृत्व विकास के कौशल विकसित करना।<br>• सामुदायिक विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामुदायिक विकास : अवधारणा, मूल्य, उद्देश्यय सामुदायिक विकास : सिद्धांत और परिणाम |
| | 1 (ब) | सामुदायिक विकास की प्रक्रियारू खोजपूर्ण चरण, चर्चा चरण, संगठनात्मक चरण, गतिविधि चरण, मूल्यांकन चरण और निरंतरता चरणय सामाजिक आवश्यकताओं की अवधारणा और प्रकार, सामाजिक पूंजी और हितधारक। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | सामुदायिक विकास के दृष्टिकोण : आवश्यकता–आधारित सामुदायिक विकास और संपत्ति–आधारित सामुदायिक विकास का अर्थ एवं संपत्ति आधारित सामुदायिक विकास की प्रक्रिया. |
| | 1 (ब) | सामुदायिक विकास के लिए गांधीवादी दर्शनरू रचनात्मक कार्यक्रम, ग्राम स्वराज, विकेंद्रीकरण, खादी, ट्रस्टीशिप, सर्वोदय और सहकारिता। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामुदायिक विकास मूल्यांकनरू : मूल्यांकन की अवधारणा और उद्देश्य, डेटा संग्रह, |
| | 1 (ब) | सामुदायिक मूल्यांकन की विधि : अवलोकन एवं सुनना, वन टू वन साक्षात्कार, कैमरे का उपयोग, सामुदायिक बैठकें, फोकस समूह चर्चा, प्रश्नावली एवं जनमत सर्वेक्षण |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | नेतृत्व की अवधारणा, शैली एवं समुदाय के नेताओं के प्रकार |
| | 1 (ब) | समुदाय के नेताओं के लिए प्रमुख खतरे और चुनौतियाँ।<br>सामुदायिक नेतृत्व विकास की रणनीतियाँ, संघर्ष : संघर्ष के अर्थ, चरण और कारण। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • सामुदायिक विकास (सीडी) की अवधारणा, उसके दर्शन, मूल्यों, प्रक्रिया और तरीकों को समझने में सक्षम बनेगे।<br>• सामुदायिक विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझने में सक्षम बनेगे।<br>• सामुदायिक विकास के विभिन्न दृष्टिकोणों को जानने में सक्षम बनेगे। |

**References:**


1. Singh, G. (2014). Community Development (Hindi). Lucknow: Rapid Book Service.
2. Singh, Mohinder (1992) Rural Development in India: Current Perspectives, New Delhi: Intellectual Publishing House.
3. Ross, M. G (1967), Community Organization. Theory, Principle and Practice,Harper & Row: New York
4. Lee, J.A.B. (2001), the Empowerment Approach to Social Work Practice: Building the Beloved Community (2nd ed.). ColumbiaUniversity Press: New York.
5. Pandey, B. & Pandey, T. (2018), Samudayik Sangathan (in Hindi), Rawat Publication: Jaipur.
6. Weil, M., Reisch, M., & Ohmer, M. L. (2013). The handbook of community practice (2ndedition). Sage.
7. Forde, C. & Lynch, D. (2013). Social work and community development: A criticalpractice perspective. Macmillan Palgrave
8. Ife, J. (2013). Community development in an uncertain world: Vision, analysis and practice. Cambridge University Press.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | ग्रामीण समुदायिक विकास |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 304 B |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • ग्रामीण विकास से संबंधित मूल अवधारणा, मॉडल, दृष्टिकोण और समस्याओं को समझना।<br>• पंचायती राज संस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना<br>• प्रशासन, नीतियों, कार्यक्रमों और ग्रामीण समुदाय के विकास के लिए काम करने वाली विभिन्न एजेंसियों के बारे में ज्ञान प्राप्त करना |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | ग्रामीण समुदाय : अवधारणा, परिभाषा और विशेषताएँ<br>ग्रामीण विकास : संकल्पना, परिभाषा, आवश्यकता एवं विशेषताएँ |
| | 1 (ब) | भारत में ग्रामीण विकास की समस्याएँ और मुद्दे : गरीबी, बेरोजगारी, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, निरक्षरता, कृषि से संबंधित सामाजिक असमानता की समस्याएँ |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | ग्रामीण विकास की रणनीतियाँ : अवधारणा, अर्थ, परिभाषाएँ, प्रकार– विकास– उन्मुख, स्थानिक योजना, एकीकृत, समग्र और भागीदारी |
| | 1 (ब) | ग्रामीण पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न प्रयोग : इटावा पायलट प्रोजेक्ट, वर्तमान ग्रामीण विकास मॉडल : ग्रामीण क्षेत्रों में शहरी सुविधाओं का प्रावधान ;च्त।द्ध |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | पंचायती राज संस्था : विकास, अवधारणा और महत्व (पीआरआई का 73वां संवैधानिक संशोधन)। |
| | 1 (ब) | ग्रामीण विकास : कुटीर और ग्रामोद्योग की भूमिका, नीति आयोग |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | ग्रामीण रोजगार और गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम : मिड–डे–मील कार्यक्रम/एमडीएम, मनरेगा, सर्व शिक्षा अभियान/एसएसए, कौशल विकास कार्यक्रम, डिजिटल इंडिया, डीडीयूजीकेवाई |
| | 1 (ब) | ग्रामीण विकास एजेंसियां : कपार्ट, एनआईआरडी, नाबार्ड। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • ग्रामीण विकास से संबंधित मूल अवधारणा, दृष्टिकोण, मॉडल और समस्याओं को समझने में सक्षम बनेगे।<br>• पंचायती राज संस्थाओं की संरचना और कार्यों को समझने में सक्षम होंगे।<br>• प्रशासन, नीतियों, कार्यक्रमों और विभिन्न को समझने में सक्षम होगे।<br>• ग्रामीण समुदाय के विकास के लिए काम करने वाली एजेंसियों से परिचित होंगे। |

**References:**


1. Das H.H. (1990), Introduction to Panchayati Raj and Community Development in India. Delhi: Kalyani Publishers
2. Gehlawat, J.K., and Kant, (1988). Strategies for Rural Development, New Delhi: Arnold Publishers
3. Ghosh, D.K. (1994). People"s Participation in Rural Development: Need and Scope, Participation Governance, New Delhi
4. Kumar, A. (Ed.) (2000). New Approach in Rural development. New Delhi: Anmol Publication,
5. Mathur, B. L. (1996) Rural Development and Co-operation. Jaipur: RBSA Publishers
6. Mishra, S.N., New Horizons in Rural Development Administration, Mittal
7. Mukherjee, Amitava,(1995) Participatory Rural Appraisal, New Delhi: Vikas Publishing House,
8. Neale Walter (1990) Developing Rural India: Policies, Politics and Progress, New Delhi: Allied Publishers.
9. Singh, G. (2014). Panchayati Raj (Hindi). Lucknow: Rapid Book Service.
10. Singh, Mohinder (1992) Rural Development in India: Current Perspectives, New Delhi: Intellectual Publishing House.
11. Harriss, J.(2017). *Rural development: Theories of peasant economy and agrarianchange*. Jaipur: Rawat.
12. Brahmanandam, T. (ed.) (2018). *Dalit issues: Caste and class interface*. Jaipur: Rawat
13. Sisodia, Y.S., & Dalapati, T. K. (Eds.) (2015). *Development and discontent in tribal India*. Jaipur: Rawat.
14. Maddick, H. (2018). *Panchayati raj: A study of rural local Government in India*. Jaipur:Rawat.
15. Jana, A.K.(Ed.) (2015). *Decentralizing rural governance and development: Perspectives, ideas and experiences*. Jaipur: Rawat.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | मानव संसाधन प्रबंधन : परिचय |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 303 C |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • मानव संसाधन प्रबंधन की अवधारणा, सिद्धांतों और कार्यों के बारे में जानकारी प्रदान करना।<br>• मानव संसाधन प्रबंधन मुद्दों के संबंध में छात्रों में क्षमता विकसित करना।<br>• वेतन एवं वेतन प्रशासन के संबंध में जानकारी प्रदान करना।<br>• संगठन की अनुशासनात्मक प्रक्रिया से अवगत कराना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | मानव संसाधन प्रबंधन : परिभाषा, महत्व, विकास, दर्शन, उद्देश्य एवं क्षेत्र |
| | 1 (ब) | मानव संसाधन प्रबंधन फंक्शनरी के सिद्धांत, कार्य एवं गुण। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | पूर्वानुमान की आवश्यकता, जनशक्ति आपूर्ति के स्रोत, भर्ती और चयन। |
| | 1 (ब) | प्रेरण और नियुक्ति, स्थानांतरण, पदोन्नति, प्रशिक्षण और विकास। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | नौकरी का मूल्यांकन, प्रदर्शन मूल्यांकन : उद्देश्य एवं पद्धति। |
| | 1 (ब) | प्रदर्शन परामर्श और संभावित मूल्यांकन, वेतन और वेतन प्रशासन। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | कर्मचारी अनुशासन और अनुशासनात्मक प्रक्रिया, औद्योगिक समाज कार्य। |
| | 1 (ब) | मानव संसाधन प्रबंधन पर उभरता परिप्रेक्ष्य |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | मानव संसाधन प्रबंधन की अवधारणा और कार्यों और संगठन में अनुशासन के बारे जानेगे एवं सक्षम बनेगे। |

**Reference**


1. वर्मा, आर.बी.एस. एवं अतुल प्रताप सिंह. 2005रू मानव संसाधन विज्ञान एवं प्रबन्ध की रुपरेखा
2. नौमा, बी.पी. औद्योगिक सम्बन्ध एवं सामाजिक सुरक्षा।
3. Agarwal, R. D. (Ed.) 1973. Dynamics of Personnel Management in India,New Delhi: Tata McGraw-Hill Publishing Company.
4. Bhargava, P. P. 1990. Issues in Personnel Management, Jaipur: Printwell P ublishers.
5. Chalofsky, Neal E and.1988. Effective Human Resource Management, Reinhart, Carlene. London: Jossey Bass.
6. ChatteIjee, Bhaskar 1999. The Executive Guide to Human ResourceManagement, New. Delhi, Excel Books.
7. Armstrong, M., Taylor, S. (2017). *A handbook of human resource managementpractices* (14th Ed.). London: Kogan Page.
8. Daft, R. L. (2016). Organization: Theory and design (12th ed.). Mason, Ohio, USA: Cengage Learning
9. Robbins, S. P., Judge, T. A., Millet, B., & Boyle, M. (2013). Organizational behavior, (7th). Australia: Pearson
10. Mathis, R. L., Jackson, J. H., Valentine, S. R., & Maglich, P. A. (2016). Human resource management,(15th ed.). Boston, USA: Cengage Learning

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | भारत में श्रम कानून |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 304 C |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | श्रम कानूनों का कार्यसाधक ज्ञान प्रदान करना<br>श्रम कानून की अवधारणा और आवश्यकता के सन्दर्भ में छात्रों को जानकारी देना।<br>श्रम कानून से संबंधित महत्वपूर्ण अधिनियमों के मुख्य प्रावधानों की जानकारी देना।<br>अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | आवश्यकता, अवधारणा और स्रोत, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन : संरचना और कार्यप्रणाली। |
| | 1 (ब) | भारतीय श्रम विधान पर प्स्ट का प्रभाव। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | भारत में श्रम कानूनः कारखाना अधिनियम 1948, खान अधिनियम 1952 एवं बागान श्रम अधिनियम, 1951 |
| | 1 (ब) | औद्योगिक रोजगार स्थायी आदेश अधिनियम 1946। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | वेतन, बोनस, प्रवासी और बाल श्रम से संबंधित विधान, वेतन भुगतान अधिनियम : 1936, न्यूनतम वेतन अधिनियम : 1948, बोनस भुगतान अधिनियम : 1965। |
| | 1 (ब) | अंतर–राज्य प्रवासी कामगार (रोजगार और सेवा शर्तों का विनियमन) अधिनियम 1979।<br>बाल श्रम (निषेध और सेवा शर्तों का विनियमन) अधिनियम 1986. |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | भवन और अन्य निर्माण श्रमिक (रोजगार और सेवा की शर्तों का विनियमन) अधिनियमरू 1996 |
| | 1 (ब) | समान पारिश्रमिक अधिनियमरू 1948य अनुबंध श्रम (विनियमन और उन्मूलन) अधिनियमरू 1970. |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • श्रमिकों के संबंध में विभिन्न कानूनों के विषय में जानकारी प्राप्त होगी।<br>• विभिन्न श्रम कल्याण कानूनों और अधिनियमों और इस संबंध में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका के बारे में जानने में सक्षम बनेगे। |

**References:**


1. Goswami, V.G. –Labour and Industrial Laws.
2. Malik, P.K. –Industrial Laws, Vol 1 & 2.
3. *Parulekar, N.W.–Model Manual on Labour Laws.*
4. Punekar, et.al. –Labour Welfare, Trade Unionism and Industrial Relations.
5. *Bhagoliwal, T.N. –Shram Arthshastra Evam Audhyogik Sambandh.*
6. Saxena, R.C.–Shram Samasyaen Evam Samaj Kalyan.
7. *Singh, Surendra –Bhartiya Audhyogik Shram. Concerned Bare Acts.*
8. *Desai, K. G. 1969. Human Problems in Indian Industries, Bombay, Sindhu.*
9. Famularo, Joseph 1987. Handbook of Human Resource Administration, McGraw-Hill.
10. Fisher, Cynthia; Schoenfeldt. Human Resource Management, Third Lyle F. and Shaw, James, G. 1997. Edition. Boston, Houghton Mifflin Company.
11. *Gary Desslar 1997. Human Resource Management, 7th Edition, New Delhi: Prentice Hall ofIndia Pvt. Ltd.*
12. Mamoria, C.B. 1989. Personnel Management, Bombay: Himalaya Publishing House.

• जरूरतों, समस्याओं, अधिकारों, जिम्मेदारियों आदि के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए सेवार्थी/ लाभार्थियों को संगठित करना सीखें और उन्हें अपने विकास में भाग लेने के लिए प्रेरित करें और उन्हें उपलब्ध सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा प्रदान करें।

• सेवार्थी/ लाभार्थियों की महसूस की गई जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकारी और गैर–सरकारी संगठनों/संस्थानों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओं का समन्वय करें।

• क्षेत्र में काम करते समय सामाजिक कार्य के सैद्धांतिक आधार यानी सिद्धांतों, दृष्टिकोण और कौशल को लागू करना सीखें।

• हाशिए पर रहने वाले समूहों के लिए सामाजिक न्याय और मानव अधिकारों से संबंधित मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करें।

**कार्य :**

• कार्यक्रम नियोजन में शामिल हों और स्वयं सहायता समूह बनाएं।

• सेवार्थी/ लाभार्थियों औरध्या समुदाय के साथ काम करें।

• सामाजिक कार्य हस्तक्षेप रणनीतियों और वकालत उपकरणों का उपयोग करें।

• संसाधन जुटाना, धन जुटाना और पड़ोसी क्षेत्र में काम कर रहे अन्य संस्थानोंध्संगठनों के साथ नेटवर्क विकसित करना।

**अवयव :**

समवर्ती क्षेत्र कार्य ग्रामीण शिविर (एक सप्ताह)

**समवर्ती क्षेत्र कार्य** पहले और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर (विषम और सम दोनों) की शुरुआत से ही सिद्धांत पत्रों के कक्षा–कक्ष शिक्षण के साथ–साथ समवर्ती क्षेत्र कार्य करना आवश्यक होगा और प्रारंभ से पहले तैयारी छोड़ने तक जारी रहेगा। परीक्षाओं का. समवर्ती क्षेत्र कार्य करने के लिए छात्रों को सप्ताह में दो दिन आवंटित किए जाएंगे।

**ग्रामीण/शहरी शिविर** : दूसरे वर्ष के सेमेस्टर–3/4 के छात्रों (अधिमानतः सेमेस्टर–3 के छात्रों के लिए) के लिए गैर सरकारी संगठनों/वीओ के सहयोग से पांच दिवसीय ग्रामीण/शहरी शिविर आयोजित किया जाएगा ताकि छात्रों को सामाजिक–सामाजिक जानकारी प्रदान की जा सके। आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थितियाँ और ग्रामीण/शहरी जीवन की समस्याएँ। ग्रामीण शिविर विश्वविद्यालय के समाज कार्य विभाग के अध्यापकों द्वारा आयोजित किया जाएगा तथा सभी विद्यार्थियों को ग्रामीण शिविर करना आवश्यक होगा।

## सेमेस्टर – चतुर्थ

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | सामाजिक नीतियां एवं योजनाएं |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 401 |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • सामाजिक नीति, योजना के क्षेत्र में विभिन्न प्रासंगिक मुद्दों के बारे में शिक्षार्थियों के बीच आलोचनात्मक समझ विकसित करना।<br>• शिक्षार्थियों के बीच नीति निर्माण और विभिन्न स्तरों पर योजना प्रक्रिया में सामाजिक कार्य हस्तक्षेप के दायरे और तरीकों की समझ विकसित करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामाजिक नीति : संकल्पना, उद्देश्य, प्रकार, दायरा, निर्धारक और सिद्धांत |
| | 1 (ब) | **सामाजिक नीति के स्रोत :**<br>भारतीय संविधान– राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत, मौलिक अधिकार, जनता की राय, कानूनी प्रावधान, न्यायालय के निर्देश, मूल्यांकन रिपोर्ट, पंचवर्षीय योजना। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986 और 1992य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 |
| | 1 (ब) | राष्ट्रीय जनसंख्या नीति 2000य विकलांग व्यक्तियों के लिए राष्ट्रीय नीति |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामाजिक योजनाः अवधारणा, उद्देश्य एवं प्रकार, कार्यक्षेत्र, अवगुण, कार्य। |
| | 1 (ब) | सामाजिक नीति के साधन के रूप में सिद्धांत और योजना। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | सामाजिक नियोजन के दृष्टिकोणः क्षेत्रीय, क्षेत्रीय विकास और एकीकृत विकासात्मक दृष्टिकोण |
| | 1 (ब) | सतत विकासः अर्थ और उद्देश्य मानव विकास सूचकांक और पीक्यूएलआई |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • सामाजिक नीति, योजना के क्षेत्र में विभिन्न प्रासंगिक मुद्दों के बारे में आलोचनात्मक समझ विकसित करने में सक्षम होंगे।<br>• नीति निर्माण और विभिन्न स्तरों पर योजना प्रक्रिया में सामाजिक कार्य हस्तक्षेप के दायरे और तरीकों को समझने में सक्षम बनेगें। |

**References:**


1. Adams, Robert (2000). Social Policy for Social Work, Palgraved Mac-millan. Basingstock

2. Bhartiya. A. K. (2010). Introduction to Social Policy. Lucknow. NRBC 3. Hill. M. (2003). Understanding Social Policy. Oxford Backwell Publishing

4. Krishna, P. S. (2017). Social exclusion and justice in India. Taylor & Francis

5. Jodhka, S. S. (2015). Caste in contemporary India. New Delhi: Routledge. 6. Kant, Anjani Women and Child Law, Central Law Publication, Allahabad

6. कान्त, अंजनी महिला एवं बाल कानून, सेन्ट्रल लॉ पब्लिकेशन, इलाहाबाद

7. कुमार, प्रकाश-सूचना का अधिकार, प्रभात पेपर बैक्स पब्लिकेशन, नई दिल्ली

8. बसु, दुर्गा दास भारत का संविधान-एक परिचय, बाधवा एण्ड कम्पनी, नागपुर

9. मिश्रा पी. डी. एवं सिंह सुरेंद्र सामाजिक नीति एवं नियोजन,

10. सिन्हा, वी. सी. अर्थशास्त्र, साहित्य भवन प्रकाशन, आगरा

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | मानसिक स्वास्थ्य और मनोचिकित्सकीय समाज कार्य |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 402 A |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • मनोचिकित्सकीय समाज कार्य के विकास की जड़ों को प्रारंभिक मानवीय आंदोलनों से लेकर औपचारिक प्रथाओं की स्थापना तक भारत और विदेश दोनों के ऐतिहासिक विकास की जानकारी देना।<br>• असामान्य व्यवहार<br>• मानसिक स्वास्थ्य की अवधारणा एवं उसके विभिन्न दृष्टिकोण पर समझ विकसित करना।<br>• मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाने के उद्देश्य से सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों के बारे में जानकारी देना।<br>• मनोरोग के अभ्यास के लिए आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | सामान्य व्यवहार : अर्थ और विशेषताएँ<br>असामान्य व्यवहार : अर्थ, लक्षण एवं निदान |
| | 1 (ब) | असामान्य व्यवहार का वर्गीकरण, असामान्य व्यवहार के सिद्धांत। असामान्य व्यवहार के मॉडल : मनो–सामाजिक, व्यवहारिक, मानवतावादी एवं मनो–विश्लेषणात्मक। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | मानसिक स्वास्थ्यः अर्थ और विशेषताएं, सामुदायिक मानसिक स्वास्थ्य,<br>मानसिक रोग : जैविक, मनोवैज्ञानिक और समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण |
| | 1 (ब) | भारत और राजस्थान में मानसिक स्वास्थ्य सेवाएँ, कानून और मानसिक स्वास्थ्य |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | मनोरोग : अर्थ, प्रकृति, कार्यक्षेत्र और महत्व, सामाजिक मनोरोग और सामुदायिक मनोरोग। |
| | 1 (ब) | मनोरोग का विकास एवं मनःचिकित्सकीय समाज कार्य। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | मनःचिकित्सकीय समाज कार्य : अवधारणा एवं ऐतिहासिक विकास। मनःचिकित्सकीय समाज कार्य के रूप में सामाजिक कार्य हस्तक्षेप। |
| | 1 (ब) | मनःचिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता : अभ्यास भूमिका एवं कार्य। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • भारतीय और विदेशी मानवीय आंदोलनों का अध्ययन करके, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं के विकास में प्रारंभिक योगदान के प्रति जानकारी प्राप्त करेगें।<br>• मानसिक स्वास्थ्य की महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझकर, विभिन्न दृष्टिकोणों पर छात्रों की समझ विकसित होगी।<br>• सरकारी कार्यक्रमों और नीतियों का विश्लेषण करके, मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार लाने के लिए उपायों को खोजने में सक्षम होगें। |

| | |
|---|---|
| | • मनोरोग अध्ययन के माध्यम से, आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण को विकसित करके मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार करने की प्रक्रिया के प्रति जागरुक होगें। |

References:


1. Dube,S 1983: Mental Health Problems of Social Disadvantaged.
2. Coleman, James, C, 1981: Abnormal Psychology and Modern Life.
3. Sarson, Irwin, G. Sarson, Barbar, R, Abnormal Psychology: 2007: The problems of MaladaptiveBehavior.
4. Horwitz A.M and Scheilt, T.L.(eds), 1999: A Handbook for the Study of Mental Health Social ContextsTheories and Systems.
5. Sadock, B.J and Sadock , V.A. (eds), 2005: Comprehensive Textbook of Psychiatry.
6. Gottlieb, B.H., 1983: Social Support Strategies, Guidelines for Mental Health Practice.
7. Sahni, A., 1999: Mental Health Care in India. Diagnosis, Treatment and Rehabilitation.
8. Mane, P. and Gandevia, K.Y., (eds), 1993: Mental Health in India: Issues and Concerns.
9. Callicut, J.W. and Lecca, P.J. (eds), 1983: Social Work and Mental Health.
10. French , L.M 1940: Psychiatric Social Work.
11. Patel, V and Thara, R., 2002: Meeting the Mental Health Needs of Developing Countries NGO institutions in India.
12. Mguire, l, 2002: Clinical Social Work: Beyond Generalist Practice with Individuals, Groupsand Families.
13. Verma, Ratna, 1991: Psychiatric social work in India. Steen, M., & Thomas, M. (2016). Mentalhealth across lifespan. New York: Rutledge
14. Butcher, J. N., Hooley, J. M., & Mineka, S. M. (2017). Abnormal psychology andmodern life. New Delhi: Pearson Education.
15. श्रीवास्तव , डॉ0 डी0 एन0 , वर्मा, डॉ0 प्रीति 2013 बाल मनोविज्ञान बाल विकास , श्री विनोद पुस्तक मंदिर 256–264 , आगरा–2 200, 81–7457–073–0
16. पाण्डेय, डॉ0 राम शकल, वर्मा, 2013 ,शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्री , श्री विनोद पुस्तक मंदिर 73–75 , आगरा–2, 60, 81–7457–137
17. अग्रवाल, डॉ0 संध्या 2016 शिक्षा के सिद्धांत, विजय प्रकाशन मंदिर 57–63, वाराणसी 160,978–93–81750–87–2
18. अग्रवाल, डॉ0 संध्या 2015 शिक्षा मनोविज्ञान, विजय प्रकाशन मंदिर 389–391 , वाराणसी

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | मानसिक और व्यक्तित्व विकार |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 403 A |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • व्यक्तित्व विकारों के संबंध में विभिन्न प्रकार के मानसिक और मनोविक्षिप्त विकारों से संबंधित जानकारी प्रदान करना।<br>• मानसिक स्वास्थ्य में सामाजिक कार्य हस्तक्षेप की प्रासंगिकता को समझने में सक्षम बनाना।<br>• मानसिक स्वास्थ्य और मानसिक स्वास्थ्य के आयामों के क्षेत्र में सामाजिक कार्य अभ्यास हेतु एकीकृत दृष्टिकोण विकसित करना।<br>• मनोचिकित्सा की समझ विकसित करना एवं मनोचिकित्सा सेटिंग में सामाज कार्य की प्रासंगिकता, प्रकृति और प्रकार के विषय में जानकारी प्रदान करना।<br>• छात्रों में मनः चिकित्सकीय समाज कार्य से संबंधित अभ्यास, आवश्यक कौशल और दृष्टिकोण विकसित करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | मानसिक विकार : मनोविकृति का वर्गीकरण एवं लक्षण, स्किजोफ्रेनिक प्रतिक्रिया, विक्षिप्त प्रतिक्रिया, उन्मत्त–रक्षात्मक प्रतिक्रिया, भावात्मक मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रिया और अन्य मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ। |
| | 1 (ब) | मिर्गी : लक्षण, निदान, उपचार और रोकथाम।<br>मानसिक विकार के उपचार में मनः चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | मनोविक्षिप्त विकार : चिंता, न्यूरोसिस, थकान सिंड्रोम, |
| | 1 (ब) | हिस्टेरिकल प्रतिक्रियाएं, फोबिया प्रतिक्रियाएं, जुनूनी–बाध्यकारी प्रतिक्रियाएं और न्यूरोटिक अवसाद, मनोविक्षिप्त विकारों के उपचार में मनः चिकित्सकीय सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | व्यक्तित्व विकार : व्यक्तित्व विकार का अर्थ और प्रकृति, |
| | 1 (ब) | व्यक्तित्व विकारों के निदान में समस्याएं. |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | व्यक्तित्व विकारों के प्रकार : स्किजॉइड (Schizoid), स्किजोटाइपल (schioztypal), आत्मकामी (Narcissistic), असामाजिक (Anti- Social), सीमा रेखा (Borderline), परिहार ( Avoidance), आश्रित ( Dependent ), जुनूनी और बाध्यकारी (Obsessive and Compulsive). |
| | 1 (ब) | मानसिक स्वास्थ्य में समाज कार्य अनुप्रयोग। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | छात्र विभिन्न मानसिक विकारों, व्यक्तित्व विकारों, सामान्य और असामान्य व्यवहार, व्यवहार संशोधन के लिए सामाजिक कार्य के विभिन्न पारंपरिक तरीकों आदि की पहचान करने में सक्षम होंगे। |

**References:**


1. Puri, Madhumita, Sen, Arun K, 1998: Mentally Retarded Children in India.
2. Rebbinc, Arthur J, 1957: Mental Hospital in India and Social Work Services.
3. World Heald Organisation, 1992: The ICD-10 Classification of Mental and Behavioral: ClinicalDescriptions and Diagnostic Guidelines.
4. Coleman, J.C., 1976: Abnormal Psychology in Modern Life.
5. Dickerson, Martha U. Ford, 1967: Social Work Practice with Mentally Retarded.
6. Friedlander, W.A., 1967: Introduction to Social Welfare (Chapter 12: Social Work inMedical andPsychiatric Settings).
7. Corson, R.C., Butcher J. N. and Mineka S., 2000: Abnormal Psychology and Modern Life.
8. Stroup, H. H., Social Work: 1960: An Introduction to the Field (Chapter 9 : Psychiatric Social Work).
9. Todd, F., Joan, 1967: Social Work with Mentally Subnormal.
10. Mishne, Judith, 1980: Psychothera Urban Community py and Training in Clinical Social Work.
11. Stream, Herber, S., 1979: Psychoanalytic Theory and Social Work Practice.
12. Golan, Naomi, 1962: Treatment in Crises Situations.
13. Maner, Joshuao, 1971: The Therapeutic Community with Chronic Mental Patients.
14. Towle, Chorlotte, 1941: Social Case Records form Psychiatric Clinics with discussion not Varma,
    R.B.S. (Ed.) 2010: Teaching Material in Social Work
15. Specht, J. (2017). *Personality development across the lifespan*. 1st E dition. L ondon:Academic Press
16. Daniel, W. B arrett. (2016). *Social psychology-core concepts and emerging trends.* London:Sage
17. Nicolson, P., & Bayne, R. (2014). *Psychology for social work. theory and practice.*London:Palgrave
18. Field, M., & Hatton, C. S. (2015). *Essential abnormal and clinical psychology*. London: Sage
19. श्रीवास्तव , डॉ0 डी0 एन0 , वर्मा, डॉ0 प्रीति 2013 बाल मनोविज्ञान बाल विकास ,श्री विनोद पुस्तक मंदिर 256–264 , आगरा–2 200, 81–7457–073–0
20. पाण्डेय, डॉ0 राम शकल, वर्मा, 2013 ,शिक्षा दर्शन और शिक्षाशास्त्री, श्री विनोद पुस्तक मंदिर 73–75 , आगरा–2, 60, 81–7457–137
21. अग्रवाल, डॉ0 संध्या 2016 शिक्षा के सिद्धांत, विजय प्रकाशन मंदिर 57–63, वाराणसी 160,978–93–81750–87–2

19ण अग्रवाल, डॉ0 संध्या 2015 शिक्षा मनोविज्ञान, विजय प्रकाशन मंदिर 389–391 , वाराणसी

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | शहरी सामुदायिक विकास |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 402 B |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • शहरी समुदाय और शहरी नियोजन की मूल अवधारणाओं के विषय में जानकारी प्रदान करना।<br>• समुदायों के जनसांख्यिकीय और भौगोलिक वितरण को जानेंगे। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | शहरी समुदाय : अर्थ, परिभाषा और विशेषताएँ<br>शहरी सामुदायिक विकास : संकल्पना, अर्थ, आवश्यकता और उद्देश्य |
| | 1 (ब) | शहरी बसावट पैटर्न : कस्बे, शहर और महानगर की विशेषताएं, उपनगर, सैटेलाइट टाउन और आंतरिक इलाके<br>मलिन बस्तियाँ : अवधारणा, अर्थ, परिभाषाएँ, विशेषताएँ |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | शहरी सामाजिक समस्याएँ : प्रदूषण, अपराध, दुर्घटनाएँ, वेश्यावृत्ति, नशीली दवाओं की लत और आवास, लिव इन रिलेशनशिप |
| | 1 (ब) | शहरी सामाजिक समस्याएँ : मानव तस्करी, किशोर अपराध और शहरी यातायात समस्याएँ |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | शहरी नियोजन : संकल्पना, अर्थ, परिभाषाएँ, विशेषताएँ,<br>शहरी नियोजन के तरीके और दृष्टिकोण |
| | 1 (ब) | जेएनएनयूआरएम, आवास और शहरी विकास निगम (हुडको), डूडा, एसयूडीए और संयुक्त राष्ट्र केंद्र के लक्ष्य और उद्देश्य<br>मानव बस्ती (यूएनसीएचएस)। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | शहरीकरण : जनसांख्यिकी में अवधारणा, अर्थ और महत्व<br>RURBAN की अवधारणा |
| | 1 (ब) | संविधान में 74वां संशोधन : शहरीकरण घटना और शहरी प्रधानता पर संरचना और कार्य |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • शहरी समुदाय और शहरी नियोजन की मूल बातें समझने में सक्षम होंगे।<br>• छात्र जनसंख्या प्रवासन और शहरीकरण के बीच संबंध को समझेंगे।<br>• छात्र प्रवासन से संबंधित विभिन्न सिद्धांतों और मॉडलों के बारे में कुछ ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होंगे। |

**References:**


1. Arup (1994). Urbanization, slums, informal sector employment and poverty, B.R.Pubication.
2. Asthana M. and Ali, Sabir, (2003). Urban Poverty in India, New Delhi: Mittal Publication
3. Bose Ashish (1978). India's Urbanization 1901 – 2000 New Delhi
4. Singh. Gurnam. 2010. Community Development, Rapid Book Services, Lucknow
5. Ahluwalia, I. J ., K anbur, S . M. R., & M ohanty, P. K. (2014). *Urbanization in India:challenges, opportunities and the way forward.* New Delhi: Sage
6. Chakravarty, S., Negi, R., & C hakravarty, S. (2016). *Space, planning and everyday contestations in Delhi*. New Delhi: Springer India.
7. Jayaram, N. (2017). *Social dynamics of the urban: studies from india*. New Delhi:Springer.
8. Williams, C. (2016). *Social work and the city: Urban themes in 21st-century social work.* London: Macmillan.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | जनजातीय समुदाय विकास |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 402 B |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • छात्रों के बीच पूरे भारत में जनजातीय समाजों की समझ को बढ़ावा देना।<br>• छात्रों को जनजातीय समुदायों द्वारा सामना किए जाने वाले सामाजिक, शैक्षिक, बुनियादी ढांचे, स्वास्थ्य और महिलाओं से संबंधित मुद्दों को समझने में सक्षम बनाना।<br>• छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में जनजातीय समूहों के सामने आने वाली विभिन्न चुनौतियों की पहचान करने में मदद करना।<br>• जनजातीय विकास कार्यक्रमों का गंभीर विश्लेषण करने और सामाजिक कार्य प्रथाओं को लागू करने के लिए छात्रों की क्षमता को बढ़ाना।<br>• हस्तक्षेप योजना को सुविधाजनक बनाने के लिए स्थानीय जनजातीय आवश्यकताओं और समस्याओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करने के लिए कौशल विकसित करना।<br>• छात्रों को आदिवासी आबादी की स्थिति पर विकासात्मक पहल की प्रभावशीलता का आकलन करने में सक्षम बनाना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | ज्नजाति : अवधारणा, अर्थ और विशेषताएँ, जनजाति का संवैधानिक अर्थ. |
| | 1 (ब) | जनजातीय समुदाय : जनजातीय समुदाय की अवधारणा, अर्थ, परिभाषा, विशेषताएँ और समस्याएँ |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | जनजातीय सामाजिक संगठन : जनजातीय परिवार, विवाह, रिश्तेदारी, युवागृह, धर्म और प्रथागत प्रथाएँ। |
| | 1 (ब) | जनजातीय विकास के परिप्रेक्ष्य : समावेशन और एकीकरण, पर्यावरण, माडा और मिनी माडा |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | भारत में जनजातीय आंदोलन : संथाल, मिजो, नागा, मुंडा, मोपला, बोडो, झारखंड, आदि। |
| | 1 (ब) | आदिवासी कार्यकर्ताओं का योगदान : बिरसा मुंडा, टंट्या भील, अंबर सिंह महाराजय जनजातीय सुधारकों का योगदानरू ठक्कर बप्पा, डॉ. बी.डी. शर्मा |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | जनजातीय विकास कार्यक्रम : आईआरडीपी, वीकेवाई, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय कार्यक्रम |
| | 1 (ब) | भारत में जनजातीय जनसंख्या द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएँ : सामाजिक समस्याएँ, आर्थिक और राजनीतिक |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | • छात्र आदिवासी समुदायों के भीतर लिंग, जातीयता, वर्ग और |

| | |
|---|---|
| | ऐतिहासिक संदर्भ की जटिलताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। जनजातीय अध्ययन से संबंधित विभिन्न सैद्धांतिक रूपरेखाओं की तुलना करने में सक्षम होंगे।<br>• जनजातीय सुधारों को चलाने वाले सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों को पहचानते हुए, जनजातीय आंदोलनों और विद्रोहों का ज्ञान प्राप्त करेंगे।<br>• छात्र जनजातीय समाजों में प्रचलित चुनौतियों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता विकसित करेंगे, जिससे विकास पहल की आवश्यकता वाले क्षेत्रों की पहचान करने में आसानी होगी।<br>• जनजातीय विकास में महत्वपूर्ण विकासात्मक मील के पत्थर का विश्लेषण करने में सक्षम होगे।<br>• जनजातीय आबादी के साथ प्रभावी जुड़ाव के लिए आवश्यक सामाजिक कार्य ज्ञान और कौशल को सीखेगे। |

**References:**


1. Bhowmick Pradeep Kumar (1994)Rural and Tribal Development Practices in India, New Delhi M.D. Publications Pvt. Ltd.. Copyright.
2. Manis Kumar Rana (Ed). (1989). Tribal India: Problem Development Perspect. New Delhi: GainPublishers.
3. Munda, Ram Dayal [Undated]: "Introduction" in Indigenous and Tribal Solidarity
4. Sharma B. D. (1978). Tribal Development – The concept and the Fame.
5. Puttaraja (2018) policies and Programmes for tribal Development in India, Germany: LamnertAcademic Publication.
6. Raha.M.K. Coomar.P.C.(2004) Tribal India: Problem, Development Prospect, New Delhi: GyanPublication House.
7. Sita Toppo. (1979). Dynamics of Tribal Development in India. New Delhi: ClassicalPublishers.
8. Smith Howard Dean (2000) Modern Tribal Development, New York: Rowman andLittlefield.
9. Soundra Pundian .M, (2001) Tribal Development: A Case study, New Delhi: AnmolPublication.
10. Sujatha, K. (1976). Educational Development among Tribes. New Delhi: South Asian Publishers Pvt.Ltd.
11. Sukant, K. Chaudary & Somendra Mohan Patnaik. (2008). Indian Tribes and Main Stream. NewDelhi: Rawat Publications.
12. Surya Kumari,C.(1990). Tribal Development and Financial Institutions in India. Allahabad.
13. Tara Patel. (1984). Development of Education among Tribal Women. Delhi: MittalPublications
14. Verma.M.M (1996) Tribal Development in India, New Delhi: Mittal Publication.
15. Vidyarthi, L.P. (Ed). (2005). Applied Anthropology in India. New Delhi: Kitab Mahal.
16. Vidyuth Joshi. (Ed.) (1998). Tribal Situation in India. New Delhi: Rawat Publication.
17. Westoby, P., & Dowling, G. (2013). *Theory and practice of dialogical community development international perspectives*. Routledege.
18. Joshi, V., & Upadhyaya, C. (Eds) (2017). *Tribal situation in India: Issues anddevelopment* (Second Revised Edition). Jaipur: Rawat.
19. Fernandez, B. (2016). *Land, labour and livelihoods: Indian women's perspectives*. Cham,Switzerland: Palgrave Macmillan

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | श्रम कल्याण और सामाजिक सुरक्षा |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 402 C |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • श्रम कल्याण की अवधारणा और महत्व के बारे में जानकारी प्रदान करना।<br>• श्रमिक कल्याण की विभिन्न एजेंसियों से परिचित कराना।<br>• सामाजिक सुरक्षा कानूनों के बारे में कार्य साधक संबंधी प्रदान करना।<br>• सामाजिक सुरक्षा के महत्व और अवधारणा की जानकारी देना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | श्रम कल्याण : अवधारणा, महत्व, उद्देश्य, दायरा, दर्शन और सिद्धांत। |
| | 1 (ब) | भारत में श्रम कल्याण का ऐतिहासिक विकास : भारत में श्रम कल्याण अधिकारी की स्थिति और कर्तव्य। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | श्रम कल्याण के संबंध में कानूनी ढांचा : संवैधानिक प्रावधान, कारखानों, खानों और बागानों में श्रम कल्याण प्रावधान।<br>श्रम कल्याण की एजेंसियां : राज्य, नियोक्ता और ट्रेड यूनियन की भूमिका। |
| | 1 (ब) | श्रम कल्याण को बढ़ावा देना।<br>भारत में श्रम कल्याण के कार्यक्रम और नीतियां। |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | कर्मचारी राज्य बीमा अधिनियम, 1948, कर्मचारी भविष्य निधि और विविध प्रावधान अधिनियम, 1952, मातृत्व लाभ अधिनियम, 1961। |
| | 1 (ब) | असंगठित श्रमिक सामाजिक सुरक्षा अधिनियम, 2008। श्रमिक मुआवजा अधिनियम, 1923 |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | सीएसआररू अवधारणा, अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता, सिद्धांत और दृष्टिकोण सीएसआर को लागू करना, बाजार स्थान और पारिस्थितिक पर्यावरण में सीएसआर, सीएसआर ऑडिट, सीएसआर उद्यमी और |
| | 1 (ब) | सामाजिक उद्यमी में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका : अवधारणा, परिभाषा, विशेषताएं और प्रकार |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | कर्मचारी कल्याण और सामाजिक सुरक्षा के बारे में ज्ञान प्राप्त करना भारत में अवधारणाएँ और प्रणालियाँ। |

**References:**


1. Vaid, K.N. (1970): Labour Welfare in India.
2. Sharma, A.M. (1991): Aspects of Labour Welfare and Social Security.
3. Morrthy, M.V. (1968): Principles of Labour Welfare.
4. Malik, P.K. (2006): Industrial Laws Vol. I and Vol. II
5. Desai, K. G. 1969. Human Problems in Indian Industries, Bombay, Sindhu.
6. Famularo, Joseph 1987. Handbook of Human Resource Administration,McGraw-Hill.
7. Fisher, Cynthia; Schoenfeldt. Human Resource Management, Third Lyle F. and Shaw, James, G. 1997. Edition. Boston, Houghton Mifflin Company.
8. Gary Desslar 1997. Human Resource Management, 7th Edition, New Delhi: PrenticeHall of India Pvt. Ltd.
9. Lal Das, D. K. 1991. Personnel Management, Industrial Relations and Labour Welfare, Agra, Y. K. Publishers.
10. Madhusudhana Rao, M. 1986. Labour Management Relations and Trade Union Leadership, New Delhi, Deep andDeep Publications.
11. Malik P. L. 1986. Handbook of Labour and Industrial Law, Lucknow, Eastern BookCompany.
12. Mamoria, C. B. and Dynamics of Industrial Relations, Mumbai, Mamoria S. 2006.Himalaya Publishing House.
13. Mamoria, C. B; Mamoria. Dynamics of Industrial Relations in India, Satish, Gankar,S. V. 2000. Mumbai, Himalaya Publishing House.
14. Agarwal, S. (2008). Corporate Social Responsibility in India. New Delhi. SagePublication.
15. Brigette Burger. The Culture of Entrepreneurship. Tata McGraw Hill Book Company, Latest Edition.
16. Bhattacharya, D. Corporate Social Development: A Paradigm Shift. New Delhi. Concept Publishing Company.
17. Blowfield, M., & Murray, A. (2014). *Corporate responsibility*, Third Edition. OUP: U.K
18. Mitra, N., & Schmidpeter, R. (eds.) (2016). *Corporate social responsibility in India:cases and developments after the legal mandate.* Switzerland: Springer.

| | | |
|---|---|---|
| **पाठ्यक्रम का नाम** | | ट्रेड यूनियन और औद्योगिक संबंध |
| **पाठ्यक्रम कोड** | | MSW 403 C |
| **पाठ्यक्रम का उद्देश्य** | | • ट्रेड यूनियन की अवधारणा और औद्योगिक संगठन में इसकी भूमिका के बारे में जानकारी प्रदान करना।<br>• ट्रेड यूनियन नेतृत्व से अवगत कराना।<br>• औद्योगिक संबंधों की अवधारणा एवं महत्व के बारे में जानकारी देना।<br>• सामूहिक सौदेबाजी और औद्योगिक संघर्ष के निवारण के बारे में जानकारी प्रदान करना। |
| यूनिट – प्रथम | 1 (अ) | अवधारणा, उद्देश्य, कार्य : भारत में ट्रेड यूनियन आंदोलन का इतिहास, ट्रेड यूनियन नेतृत्व। |
| | 1 (ब) | सिद्धांत, कानूनी प्रावधान और संगठन। |
| यूनिट– द्वितीय | 1 (अ) | औद्योगिक संबंध : अवधारणा, उद्देश्य, कार्यक्षेत्र, दृष्टिकोण, निर्धारक और प्रतिबिम्बक। |
| | 1 (ब) | औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 |
| यूनिट– तृतीय | 1 (अ) | सामूहिक सौदेबाजी की परिभाषा, उद्देश्य, सिद्धांत, रूप, तरीके और सिद्धांत। |
| | 1 (ब) | सामूहिक सौदेबाजी का कानूनी ढांचा। |
| यूनिट– चतुर्थ | 1 (अ) | औद्योगिक संघर्ष के प्रबंधन का अर्थ, दृष्टिकोण और शैली।<br>शिकायत : अर्थ, शिकायत प्रक्रिया।<br>कार्यकर्ता भागीदारी : अवधारणा और अभ्यास। |
| | 1 (ब) | ट्रस्टीशिप : अवधारणा और भारत में औद्योगिक संबंधों पर इसका प्रभाव, भारत में बदलते सामाजिक–आर्थिक परिदृश्य और औद्योगिक संबंध। |
| **पाठ्यक्रम परिणाम** | | ट्रेड यूनियनों, औद्योगिक संबंधों, सामूहिक सौदेबाजी और औद्योगिक संघर्ष से परिचित होना। |

*References:*


1. Promod Verma. 2005. Trade Union in India
2. Mukerjee, S, Khare, H.P. 2003. Current Trends in Indian Trade Union Movement.
3. Punekar. 2010. Labour Welfare, Trade Union and Industrial Relations
4. I.C.B. Memoria and S.Memoria (1989): Dynamics of Industrial Relations an India.
5. वर्मा, आर.बी.एस. एवं अतुल प्रताप सिंहः उद्योगों में अनुशासनात्मक प्रक्रिया।

## कोर्स का नाम– फील्ड वर्क प्रैक्टिकल /ब्लॉक फील्ड प्लेसमेंट
## कोर्स कोड : एमएसडब्ल्यू 404

### सेमेस्टर–IV

**उद्देश्य :**

- एजेंसी की सेवा वितरण प्रणाली, समस्याओं और निष्पादन में आने वाले मुद्दों का गंभीर विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- एजेंसी या सामुदायिक ढांचे के भीतर गतिविधियों की योजना बनाने, व्यवस्थित करने और कार्यान्वित करने की क्षमता विकसित करना।
- व्यवहार में नवाचारों को शुरू करके सेवा वितरण में सुधार के लिए परिवर्तनों को प्रभावित करने की क्षमता विकसित करना।
- अन्य संगठनों के साथ संचार और नेटवर्किंग में कौशल में सुधार करें।

**कार्य :**

- आसपास के क्षेत्र की शक्ति संरचना को समझें और स्थानीय नेतृत्व की पहचान करें।
- एजेंसी और या सामुदायिक सेवाओं के उपयोग में ग्राहकध्लाभार्थी औरध्या लोगों की भागीदारी की तलाश करें।
- एजेंसी औरध्या समुदाय आधारित सेवाओं में भाग लें।
- अन्य संस्थानों/संगठनों के साथ टीम वर्क।

**चतुर्थ घटक :**

समवर्ती क्षेत्र कायर्रू पहले और दूसरे वर्ष के सेमेस्टर (विषम और सम दोनों) की शुरुआत से ही सिद्धांत पत्रों के कक्षा–कक्ष शिक्षण के साथ–साथ समवर्ती क्षेत्र कार्य करना आवश्यक होगा और प्रारंभ से पहले तैयारी छोड़ने तक जारी रहेगा। परीक्षाओं का. समवर्ती क्षेत्र कार्य करने के लिए छात्रों को सप्ताह में दो दिन आवंटित किए जाएंगे। छात्रों को प्रत्यक्ष सेवा वितरण शुरू करने और उसमें भाग लेने के लिए सामाजिक कल्याण एजेंसियों या खुली सामुदायिक सेटिंग्स में रखा जा सकता है। प्रत्येक छात्र के लिए प्रति सप्ताह कम से कम 15 घंटे (रिपोर्ट लेखन सहित) समवर्ती क्षेत्र कार्य की आवश्यकता होगी। प्रति सेमेस्टर 14 सप्ताह के क्षेत्र अनुभव के आधार पर, छात्रों को प्रत्येक सेमेस्टर में 200 घंटे या लगातार दो सेमेस्टर के लिए कुल 400 घंटे जमा करने चाहिए।

**ब्लॉक प्लेसमेंट :**

प्रथम वर्ष के सेमेस्टर–2 के अंत में, छात्रों को एक सामाजिक कल्याण एजेंसी या परियोजना में छह सप्ताह के ब्लॉक फील्ड कार्य प्रशिक्षण से गुजरना होगा। इसे रोजगार–पूर्व अनुभव के रूप में अधिक माना जाता है। ब्लॉक प्लेसमेंट एजेंसियोंध्परियोजनाओं का चयन छात्रों की सहमतिध्पसंद से किया जाएगा। एक छात्र को एजेंसी में पेशेवर रूप से योग्य सामाजिक कार्यकर्ता की देखरेख में रखा जाना चाहिए। एक छात्र को प्लेसमेंट पत्र में विभाग द्वारा

निर्दिष्ट तिथि पर ब्लॉक फील्ड कार्य शुरू करना होगा। शामिल होने में कोई भी अनुचित देरी ब्लॉक प्लेसमेंट या बंद हो जाएगी। यदि कोई छात्र एजेंसी औरध्या विभाग की पूर्वानुमति के बिना ब्लॉक प्लेसमेंट एजेंसी छोड़ देता है या उसका प्रदर्शन असंतोषजनक पाया जाता है, तो उसे ब्लॉक फील्ड कार्य दोहराना होगा।

ब्लॉक प्लेसमेंट के दौरान, एक छात्र से निर्धारित तरीके से विभाग को साप्ताहिक रिपोर्ट जमा करने की अपेक्षा की जाएगी। ब्लॉक प्लेसमेंट की पूरी अवधि के दौरान मुख्य रूप से बीमारी के आधार पर छुट्टी की अनुमति दी जाएगी। मास्टर ऑफ सोशल वर्क की डिग्री प्रदान करने से पहले ब्लॉक प्लेसमेंट को सफलतापूर्वक पूरा करना अनिवार्य है।

एफ. कौशल कार्यशालारू कौशल कार्यशाला एक ऐसा मंच है जिसमें मूल्यों, सिद्धांतों, विधियों, तकनीकों, उपकरणों आदि को अभ्यास कौशल में अनुवादित किया जाता है, अर्थात श्करके सीखनाश। कार्यशाला में प्रयोगात्मक शिक्षा के माध्यम से, व्यक्तिगत स्व और पेशेवर स्व को विकसित करने के लिए अंतर्दृष्टि प्राप्त की जाती है। कौशल कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य कार्यशालाओं और विशेष सत्रों के माध्यम से छात्रों में आत्मविश्वास पैदा करना और ज्ञान, कौशल, योग्यता और व्यवहारिक आधार को मजबूत करना है। कौशल कार्यशाला के अंतर्गत की जाने वाली गतिविधियाँ हैंरू (i) भूमिका निभानाय (ii) प्रेरक गीतों और अन्य इंटरैक्टिव दृश्य मीडिया का उपयोगय (पपप) पटकथा लेखनध्नुक्कड़ नाटक सहित नुक्कड़ नाटकों की तैयारीय (iv) सिमुलेशन अभ्यासय (v) फिल्मों की स्क्रीनिंगय (vi) परामर्श तकनीकों का अभ्यासय (vii) सहभागी तकनीकों का अभ्यासय (viii) संचार पर कार्यशालाएँय (ix) नकली साक्षात्कारय और (ix) वकालत के लिए रणनीतिक योजना।

**फील्ड वर्क प्लेसमेंट :**

प्रवेश समाप्त होते ही प्लेसमेंट प्रक्रिया शुरू कर दी जाएगी। प्रथम और द्वितीय वर्ष के सेमेस्टर–1, 2, 3 और 4 के छात्रों को विभाग के एक संकाय सदस्य की देखरेख में रखा जाएगा। विभाग पर्यवेक्षक द्वारा एक या दो छात्रों को फील्ड वर्क एजेंसी या समुदाय में रखा जाएगा और तदनुसार उनकी एक सूची प्रदर्शित की जाएगी। फील्ड वर्क प्लेसमेंट में छात्रों या संकाय सदस्यों की एक–दूसरे के लिए प्राथमिकता पर विचार नहीं किया जाएगा। छात्रों की फील्ड वर्क एजेंसी या समुदाय एक वर्ष के लगातार दो सेमेस्टर के लिए वही रहेगा।

**क्षेत्र कार्य पर्यवेक्षण**

पर्यवेक्षण क्षेत्र कार्य अभ्यास का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। इसलिए, विभाग पर्यवेक्षक को निम्नलिखित प्रयास करने चाहिएरू

- छात्रों के साथ सम्मेलन का कार्यक्रम तैयार करेंगे।
- सीखने की योजना तैयार करने में छात्रों की सहायता करेंगे।

- विभिन्न परिस्थितियों से निपटने में परिपक्वता विकसित करने और समाज, संस्कृति और समुदायों की बहुलता और विविधता की सराहना और सम्मान करना सीखने के लिए छात्रों का मार्गदर्शन करेंगे।
- उन्हें पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में विकसित होने, पेशे की मांगों के बारे में जागरूक होने और स्थितियों को स्वतंत्र रूप से संभालने की क्षमता विकसित करने में मदद करेंगे।
- छात्रों की प्रगति का ध्यान रखें और उन्हें प्रदर्शन के बारे में फीडबैक प्रदान करेंगे।
- एजेंसियों और समुदायों का समय–समय पर दौरा करेंगे।
- छात्रों की फील्ड वर्क रिपोर्ट की जाँच करें और उन्हें रिपोर्ट लेखन के संबंध में आवश्यक दिशानिर्देश प्रदान करेंगे।
- नियमित, समय पर और व्यवस्थित इनपुट प्रदान करेंगे।
- उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण अनुशंसा वाले छात्रों के प्रदर्शन का आकलन।

प्रत्येक छात्र को संबंधित विभाग पर्यवेक्षक के साथ प्रति सप्ताह कम से कम एक घंटे का पर्यवेक्षण मिलना चाहिए। पर्यवेक्षण के इन घंटों की गणना अनिवार्य रूप से विभाग पर्यवेक्षक के कुल शिक्षण घंटों में उसके अधीन छात्रों की नियुक्ति के अनुसार की जाएगी। आम तौर पर, पर्यवेक्षण की तीन प्रमुख विधियाँ हैंरू व्यक्तिगत सम्मेलन, समूह सम्मेलन, और एजेंसी या सामुदायिक दौरे।

व्यक्तिगत सम्मेलन क्षेत्र कार्य पर्यवेक्षण के लिए एक ट्यूटोरियल दृष्टिकोण है। यह एक माध्यम है जिसके माध्यम से विभाग पर्यवेक्षक व्यक्तिगत रूप से नियोजित शैक्षिक अनुभव प्रदान करता है। समूह सम्मेलन का आयोजन अन्य छात्रों के अनुभव से सीखकर छात्रों के ज्ञान को बढ़ाने के इरादे से किया जाता है। यह छात्रों के एक समूह के साथ उनके संबंधित पर्यवेक्षकों के साथ आयोजित किया जाता है। विभाग द्वारा समूह सम्मेलन का कार्यक्रम पहले से ही घोषित किया जाना चाहिए। सिद्धांत कक्षाओं के दौरान, व्याख्यानों के अलावा व्यक्तिगत औरध्या समूह सम्मेलन नियमित रूप से दोपहर में (अधिमानतः अंतिम दो अवधि) आयोजित किए जाएंगे।

विभाग के पर्यवेक्षकों को छात्रों के क्षेत्र कार्य कार्यों पर सतर्क रहने के लिए नियमित दौरे करके अपने पर्यवेक्षण के तहत क्षेत्र कार्य एजेंसियों औरध्या समुदायों के साथ संपर्क में रहना चाहिए (प्रत्येक एजेंसी औरध्या समुदाय के तहत प्रति माह कम से कम एक दौरा) यदि आवश्यक हो तो उनका पर्यवेक्षण और अधिक)।

उत्तीर्ण/अनुत्तीर्ण अनुशंसा के साथ छात्रों के प्रदर्शन का आकलन करना विभाग पर्यवेक्षक की जिम्मेदारी है।

**क्षेत्रीय कार्य में उपस्थिति :**

इस पाठ्यक्रम में छात्रों को पेशेवर सामाजिक कार्यकर्ता बनने के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है। उनसे उपस्थिति से संबंधित निम्नलिखित जिम्मेदारियों को पूरा करने की उम्मीद की जाती है –

- विभाग विद्यार्थियों से अपेक्षा करता है कि वे फील्ड कार्य में नियमित एवं समय के पाबंद रहें। केवल विशेष मामलों में ही बीमारी या महत्वपूर्ण व्यक्तिगत कारणों के आधार पर फील्ड कार्य से छुट्टी का प्रावधान है। फील्ड कार्य से छुट्टी आमतौर पर पहले ही लागू की जानी चाहिए।

- किसी छात्र को संस्थागत अवकाश पर फील्ड कार्य में भाग लेने की आवश्यकता नहीं है, हालांकि, इसका उपयोग विभाग पर्यवेक्षक के निर्देशों के अनुसार किया जा सकता है और ऐसे सभी दिनों को अतिरिक्त फील्ड कार्य कहा जाएगा।
- समवर्ती क्षेत्र कार्य में नब्बे प्रतिशत (90 प्रतिशत) उपस्थिति अनिवार्य है।
- क्षेत्र कार्य के सभी घटकों अर्थात अभिविन्यास कार्यक्रम, व्यक्तिगत सम्मेलन, समूह सम्मेलन, ग्रामीण शिविर, कार्यशालाएं, विशेष व्याख्यान और सेमिनार में उपस्थिति भी अनिवार्य है।
- यदि कोई छात्र किसी सेमेस्टर में समवर्ती क्षेत्र कार्य के निर्धारित दिनों में भाग लेने में असमर्थ है, तो उससे इसकी क्षतिपूर्ति की उम्मीद की जाती है और इस विकल्प का प्रयोग विभाग पर्यवेक्षक की पूर्व सूचना और अनुमोदन के साथ किया जाना चाहिए।
- यदि किसी छात्र द्वारा उस सेमेस्टर के अंत तक, जिसमें वह पढ़ रहा है, फील्ड वर्क के आवश्यक घंटे और उसके घटकों को पूरा नहीं किया जाता है, तो 'असफल' अनुशंसा के साथ छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन जारी किया जाएगा। संबंधित विभाग पर्यवेक्षक. फील्ड वर्क मूल्यांकन में 'असफल' अनुशंसा प्राप्त करने के बाद, छात्र को सिद्धांत और फील्ड वर्क दोनों में असफल माना जाएगा।

**फील्ड वर्क रिकॉर्ड /असाइनमेंट जमा करना :**

छात्रों से रिकॉर्ड/असाइनमेंट जमा करने से संबंधित निम्नलिखित जिम्मेदारियों को पूरा करने की उम्मीद की जाती है –

• विभाग पर्यवेक्षक को समय पर और उचित तरीके से सीखने की योजना, एजेंसीध्सामुदायिक प्रोफाइल तैयार करना और प्रस्तुत करना।

• फील्ड कार्य पर बिताए गए वास्तविक घंटों का संचयी रिकॉर्ड बनाए रखना।

• समवर्ती क्षेत्र कार्य के साप्ताहिक रिकॉर्ड को निर्धारित तरीके से पूरा करना और जमा करना।

• अवलोकन दौरों, अभिविन्यास कार्यक्रम, क्षेत्र दौरे, ग्रामीण शिविर, कौशल विकास कार्यशालाओं आदि के रिकॉर्ड अलग से तैयार करना और जमा करना।

• फील्ड वर्क की समाप्ति के बाद फील्ड वर्क स्व–मूल्यांकन फॉर्म को पूरा करना और जमा करना।

• सामाजिक कार्य के छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे परिपक्वता के साथ व्यवहार करें, मनुष्यों के प्रति सम्मान रखें, जिम्मेदारी, शालीनता प्रदर्शित करें और अपने संबंधित क्षेत्र में व्यक्तियों की गरिमा और मूल्य बनाए रखने की दिशा में काम करें।

# शोध प्रबंध हेतु दिशानिर्देश

## पाठ्यक्रम का नाम – शोध प्रबंध
## कोर्स कोड– एमएसडब्ल्यू 405

**उद्देश्य :**

- अनुसंधान के बारे में कौशल और ज्ञान विकसित करना।
- डेटा विश्लेषण और रिपोर्ट लेखन को समझना।
- एमएसडब्ल्यू के चौथे सेमेस्टर के छात्रों से उस क्षेत्र में व्यापक अध्ययन करने के बाद एक विशिष्ट सामाजिक मुद्दे पर एक शोध प्रबंध लिखने की उम्मीद की जाती है। अपेक्षा यह है कि, छात्र अपने स्वयं के सीखने की जिम्मेदारी लें और एक साहित्य समीक्षा तैयार करें, अध्ययन करने के लिए एक विधि चुनें, अपने निष्कर्ष लिखें और चर्चा अध्याय में परिणामों पर चर्चा करना।
- सभी शोध प्रबंध प्रारूप, शैली और डिजाइन में भिन्न होंगे। एक विशिष्ट प्रारूप गाइड के लिए शोध प्रबंध को डबल या डेढ़ रिक्त स्थान के साथ शब्द–संसाधित करने की आवश्यकता होगी, और बाइंडिंग को सक्षम करने के लिए एक विस्तृत बाएं हाशिया या इसे हाथ से भी लिखा जा सकता है। यह अंग्रेजी या हिंदी में लिखा जा सकता है। प्रारूप में शामिल होंगे।

1. शीर्षक पृष्ठ
2. विषय–सूची
3. तालिकाओं की सूची (यदि कोई हो) और संक्षिप्ताक्षरों की सूची (यदि कोई हो), वर्णानुक्रम में क्रमबद्ध।
4. परिचय
5. अध्ययन का उद्देश्य, दायरा और तर्कसंगतता
6. साहित्य समीक्षा
7. कार्यप्रणाली (अनुसंधान डिजाइन, नमूनाकरण, उपकरण और तकनीक, डेटा का स्रोत)
8. तालिकाएँ / केस अध्ययन (अध्ययन की आवश्यकता के अनुसार)
9. चर्चा एवं विश्लेषण
10. निष्कर्ष
11. निष्कर्ष और सिफारिशें
12. ग्रंथ सूची (सभी पुस्तकों, जर्नल लेखों, वेब साइटों, समाचार पत्रों और अन्य की एक सूची वे स्रोत जो आपने अपने शोध प्रबंध में उपयोग किए हैं)।

**परिणाम :**

अनुसंधान चरणों, अनुसंधान समस्या की पहचान, डेटा विश्लेषण, रिपोर्ट लेखन आदि के बारे में ज्ञान प्राप्त करना।